कार्यालय, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

ब्लॉक-भीण्डर एवं वल्लभनगर

(उदयपुर)

प्रेरणा

प्रश्न बैंक

(एक नवाचारी पहल)

अर्थशास्त्र

कक्षा- 12

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक एवं संख्यात्मक उन्नयन हेतु अभिनव कार्ययोजना के तहत् निर्मित

—मुख्य संरक्षक—

श्री गौरव अग्रवाल IAS
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान

श्रीमती एंजिलिका पलात
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, उदयपुर

श्री पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
उदयपुर

—संरक्षक—

श्रीमती मोनिका जाखड़
उपखण्ड अधिकारी
भीण्डर

श्री गोविन्द सिंह
उपखण्ड अधिकारी
वल्लभनगर

—मार्गदर्शक—

श्री महेन्द्र कुमार जैन
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
भीण्डर

श्री अनिल कुमार पोरवाल
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
वल्लभनगर

श्री भैरूलाल सालवी
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
भीण्डर

श्री रमेश खटीक
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
भीण्डर

श्री गोपाल लाल मेनारिया
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
वल्लभनगर

श्री मुनेश मीणा
संदर्भ व्यक्ति
भीण्डर

श्री ओंकार लाल गोपावत
संदर्भ व्यक्ति
वल्लभनगर

CBEO BLOCK BHINDER, VALLABHNAGAR

—संयोजक—

विक्रम कुमार बोहरा
व्याख्याता वाणिज्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रूण्ड़ेडा, वल्लभनगर

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन प्रश्न बैंक निर्माण समिति – समस्त व्याख्याता अर्थशास्त्र

ब्लॉक भीण्डर व ब्लॉक वल्लभनगर,जिला–उदयपुर(राज.)

1. नीलम पंचोली व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.खेरोदा
2. कैलाश चन्द्र पाटीदार व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.लूणदा
3. अनुभा शर्मा व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.
4. चंदन सिंह देवड़ा व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.आसावरा
5. केदार सिंह व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.भीण्डर
6. प्रहलाद सिंह बारहठ व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.
7. विक्रम कुमार बोहरा व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.रूण्ड़ेडा

CBEO BLOCK BHINDER, VALLABHNAGAR

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,अजमेर

विषय :– अर्थशास्त्र

कक्षा – 12

अनुक्रमणिका

क्र.स.	इकाई का नाम
1.	अर्थशास्त्र का परिचय
2.	उपभोक्ता का व्यवहार
3.	उत्पादन तथा लागत की अवधारणा
4.	पूर्ण प्रतिर्स्पधा
5.	बाजार संतुलन
6.	प्रतिर्स्पधा रहित बाजार
7.	राष्ट्रीय आय का लेखांकन
8.	मुद्रा एवं बैंकिंग
9.	आय एवं रोजगार का निर्धारण
10.	सरकारी बजट और अर्थव्यवस्था
11.	खुली अर्थव्यवस्था

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान
पाठ्यक्रम परीक्षा–2023
अर्थशास्त्र (ECONOMICS)
विषय कोड–10
कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है–				
प्रश्नपत्र	समय(घंटे)	प्रश्नपत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एकपत्र	3:15	80	20	100

खण्डः अ समष्टि अर्थशास्त्रः एक परिचय

Part A: Introductory Macroeconomics

इकाई–1 समष्टि अर्थशास्त्र 8

अध्याय 1. परिचय

समष्टि अर्थशास्त्र का उद्भव, समष्टि अर्थशास्त्र की वर्तमान पुस्तक का संदर्भ।

अध्याय 2.राष्ट्रीय आय का लेखांकन

समष्टि अर्थशास्त्र की मूलभूत संकल्पनाएं, आय का वर्तुल प्रवाह (दो सेक्टर मॉडल)–राष्ट्रीय आय गणना की विधियॉ– मूल्यवर्धित या उत्पाद विधि, व्यय विधि, आय विधि। साधन लागत आधारित कीमतें तथा बाजार कीमतें। समष्टि अर्थशास्त्रीय तादात्म्य, मौद्रिक और वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद, सकल घरेलू उत्पाद और कल्याण।

Unit 1: Macroeconomics

Chapter 1. INTRODUCTION

Emergence of Macroeconomics, Context of the Present Book of Macroeconomics

Chapter 2. NATIONAL INCOME ACCOUNTING

Basic concepts in macroeconomics, Circular flow of income (two sector model); Methods of calculating National Income - Value Added or Product method, Expenditure method, Income method. Factor cost, basic prices and market prices, macreoeconomic identities, Real and Nominal GDP, GDP and Welfare.

इकाई–2 मुद्रा और बैंकिग 8

अध्याय 3. मुद्रा और बैंकिग

मुद्रा के कार्य ,मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति, बैंकिंग व्यवस्था द्वारा साख–सृजन : एक काल्पनिक बैंक का चिट्ठा, साख सृजन की सीमाएं तथा मुद्रा–गुणक, मुद्रा पूर्ति के नियंत्रण के नीतिगत उपकरण।

Unit 2: Money and Banking

Chapter 3. Money and Banking

Functions of Money, demand for money, supply of money, Money creation by the banking system : Balance Sheet of a Fictional Bank, Limits to Credit Creation and Money Multiplier, policy tools to control money supply.

इकाई 3. आय और रोजगार 8

अध्याय 4. आय और रोजगार का निर्धारण

समग्र मांग एवं उसके अवयव, उपभोग, निवेश, दो सेक्टर मॉडल में आय का निर्धारण, अल्पकाल में संतुलन आय का निर्धारण, स्थिर कीमत स्तर के साथ समष्टि अर्थशास्त्रीय संतुलन, समग्र मांग में स्वायत्त परिवर्तन का आय तथा उत्पादन पर प्रभाव, गुणक क्रियाविधि, अन्य संकल्पनाए।

Unit 3: Income and Employment

Chapter 4. Determination of Income and Employment

Aggregate demand and its components-consumption, investment, determination of Income in two sector model, Determination of equilibrium with price level, fixed effect of an autonomous change in aggregate demand on income and output. The multiplier mechanism, other concepts.

इकाई 4: सरकारी बजट

8

अध्याय 5. सरकारी बजट और अर्थव्यवस्था

सरकारी बजट – अर्थ तथा इसके अवयव, सरकारी बजट के उद्देश्य, प्राप्तियों का वर्गीकरण, व्यय का वर्गीकरण। संतुलित, अधिशेष एवं घाटा बजट। सरकारी घाटे के माप।

Unit 4: Government Budget

Chapter 5. Government Budget and the Economy

Government budget - meaning, objectives and its components, Objectives of government budget, Classification of receipts , Classification of expenditure,Balanced, surplus, deficit Budget. Measures of government deficit.

इकाई 5: खुली अर्थव्यवस्था **8**

अध्याय 6. खुली अर्थव्यवस्था–समष्टि अर्थशास्त्र

अदायगी संतुलन –चालू खाता, पूँजी खाता, अदायगी संतुलन– आधिक्य और घाटा। विदेशी विनिमय बाजार, विदेशी विनिमय दर, विनिमय दर का निर्धारण, तिरती और स्थिर विनिमय दर प्रणालियों के गुण–दोष, प्रबंधित तिरती।

Unit 5: Open Economy

Chapter 6. Open Economy-Macroeconomics

Balance of payments, current account, capital account, balance of payments surplus and deficit. Foreign exchange market, Foreign exchange rate, Determination of exchange rate , merits and demerits of flexible and fixed exchange rate systems, managed floating.

खण्डः ब व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय

Part B :Introductory Microeconomics

इकाई 1. व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय **6**

अध्याय 1. परिचय

सामान्य अर्थव्यवस्था, अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ, आर्थिक क्रियाकलापों का आयोजन, (केंद्रीयकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था, बाजार अर्थव्यवस्था), सकारात्मक तथा आदर्शक अर्थशास्त्र, व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र।

Unit 1: Introductory Microeconomics

Chapter 1. INTRODUCTION

A Simple Economy , Central Problems of an Economy , Organisation of Economic Activities ,The Centrally Planned Economy,The Market Economy, Positive and Normative Economics, Microeconomics and Macroeconomics.

इकाई 2. उपभोक्ता व्यवहार **10**

अध्याय 2. उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत

उपयोगिता, गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण, क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण, उपभोक्ता का बजट, बजट सेट एवं बजट रेखा, बजट सेट में बदलाव, उपभोक्ता का इष्टतम चयन, माँग, माँग वक्र तथा माँग का नियम, अनधिमान वक्रों तथा बजट बाध्यताओं से माँग वक्र की व्युत्पत्ति, सामान्य तथा निम्नस्तरीय वस्तुए, स्थानापन्न तथा पूरक वस्तुए, माँग वक्र में शिफ्ट, माँग वक्र की दिशा में गति और माँग वक्र में शिफ्ट, बाजार माँग,

माँग की लोच, रैखिक माँग वक्र की दिशा में लोच, किसी वस्तु के लिए माँग की कीमत लोच को निर्धारित करने वाले कारक, लोच तथा व्यय।

Unit 2: Consumer Behaviour

Chapter 2. Theory of Consumer Behaviour

Utility, Cardinal Utility Analysis, Ordinal Utility Analysis, The Consumer's Budget, Budget Set and Budget Line, Changes in the Budget Set, Optimal Choice of the Consumer, Demand, Demand Curve and the Law of Demand, Deriving a Demand Curve from Indifference Curves and Budget Constraints, Normal and Inferior Goods, Substitutes and Complements, Shifts in the Demand Curve , Movements along the Demand Curve and Shifts in the Demand Curve, Market Demand, Elasticity of Demand, Elasticity along a Linear Demand Curve, Factors Determining Price Elasticity of Demand for a Good, Elasticity and Expenditure.

इकाई 3: उत्पादन तथा लागत की अवधारणाएँ. 10

अध्याय 3. उत्पादन तथा लागत

उत्पादन फलन, अल्पकाल तथा दीर्घकाल, कुल उत्पाद, औसत उत्पाद तथा सीमांत उत्पाद, हासमान सीमांत उत्पाद नियम तथा परिवर्ती अनुपात नियम, कुल उत्पाद, सीमांत उत्पाद तथा औसत उत्पाद वक्र की आकृतियाँ, पैमाने का प्रतिफल, लागतें, अल्पकालीन लागतें व दीर्घकालीन लागतें।

Unit 3: Concepts of Production and Costs

Chapter **3. Production and Costs**

Production Function. The Short Run and the Long Run. Total Product, Average Product and Marginal Product. The Law of Diminishing Marginal Product and the Law of Variable Proportions. Shapes of Total Product, Marginal Product and Average Product Curves. Returns to Scale, Costs, Short Run and Long Run Costs .

इकाई 4: पूर्ण प्रतिस्पर्धा...(अंक–8)

अध्याय 4. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धांत

पूर्ण प्रतिस्पर्धाः पारिभाषिक लक्षण, संप्राप्ति, लाभ अधिकतमीकरण, लाभ अधिकतमीकरण समस्याः आरेख द्वारा प्रदर्शन, एक फर्म का पूर्ति वक्र– एक फर्म का अल्पकालीन पूर्ति वक्र, एक फर्म का

दीर्घकालीन पूर्ति वक्र, उत्पादन बंदी बिंदु, सामान्य लाभ तथा लाभ–अलाभ बिंदु। फर्म के पूर्ति वक्र के निर्धारक तत्व– प्रौद्योगिकीय प्रगति, आगत कीमतें। बाजार पूर्ति वक्र, पूर्ति की कीमत लोच ।

Unit 4: Perfect Competition

Chapter 4: The Theory of the Firm under Perfect Competition

Perfect Competition: Defining Features, Revenue , Profit Maximization , The Profit Maximization Problem: Graphical Representation, Supply Curve of a Firm, Short Run Supply Curve of a Firm. Long Run Supply Curve of a Firm, The Shut Down Point , The Normal Profit and Break-even Point , Determinants of a Firm's Supply Curve, Technological Progress, Input Prices, Market Supply Curve, Price Elasticity of Supply.

अध्याय 5: बाजार संतुलन

संतुलन, अधिमाँग, अधिपूर्ति, बाजार संतुलनः फर्मों की स्थिर संख्या, बाजार संतुलनः निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन, अनुप्रयोग, उच्चतम निर्धारित कीमत, निम्नतम निर्धारित कीमत।

Chapter 5: Market Equilibrium

Equilibrium, Excess Demand, Excess Supply, Market Equilibrium: Fixed Number of Firms, Market Equilibrium: Free Entry and Exit, Applications, Price Ceiling Price Floor.

इकाई 5: प्रतिस्पर्धारहित बाजार 6

अध्याय 6. प्रतिस्पर्धारहित बाजार

वस्तु बाजाार में सामान्य एकाधिकार, बाजार माँग वक्र औसत संप्राप्ति वक्र, कुल, औसत तथा सीमांत संप्राप्तियाँ, सीमांत संप्राप्ति और माँग की कीमत लोच, एकाधिकारी फर्म का अल्पकालीन संतुलन, अन्य पूर्ण प्रतिस्पर्धारहित बाजार, एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा, अल्पाधिकार।

Chapter **6. NON-COMPETITIVE MARKETS**

Simple Monopoly in the Commodity Market, Market Demand Curve is the Average Revenue Curve, Total, Average and Marginal Revenues, Marginal Revenue and Price Elasticity of Demand, Short Run Equilibrium of the Monopoly Firm, Other Non-perfectly Competitive Markets , Monopolistic Competition, Oligopoly.

निर्धारित पुस्तकें –

1. **व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय–** एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
Microeconomics - NCERT's Book Published under Copyright
2. **समष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय–**एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
Macroeconomics - NCERT's Book Published under Copyright

उच्च माध्यमिक परीक्षा मॉडल प्रश्न पत्र– 2022
प्रश्न बैंक
विषय – अर्थशास्त्र
इकाई–व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय

प्रश्न.1 अर्थशास्त्र का जनक किसे माना जाता है ?
(अ) एडम स्मिथ (ब) मार्शल
(स) रोबिन्स (द) सेम्युलसन (अ)

प्रश्न.2 अर्थशास्त्र को ''आर्थिक कल्याण'' का उद्देश्य कहा है –
(अ) रोबिन्स (ब) अल्फ्रेड मार्शल
(स) जे के मेहता (द) एडम स्मिथ (ब)

प्रश्न.3 व्यष्टि और समष्टि शब्दों का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया –
(अ) 1930 में (ब) 1933 में
(स) 1936 में (द) 1939 में (ब)

प्रश्न.4 व्यष्टि और समष्टि शब्दों का प्रयोग किस अर्थशास्त्री के द्वारा किया गया ?
उत्तर :– व्यष्टि और समष्टि शब्दों का प्रयोग रेग्नर फ्रिश ने किया।

प्रश्न.5 The General Theory Of Employment ,Interest and Money पुस्तक के लेखक है–
उत्तर :–जॉन मेनार्ड कीन्स

प्रश्न.6 अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं को लिखिए।
उत्तर :– अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं–
1. किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और कितनी मात्रा में।
2. इन वस्तुओं का उत्पादन कैसे करते है?
3. इन वस्तुओं का उत्पादन किसके लिए किया जाए।

प्रश्न.7 अर्थव्यवस्था की उत्पादन संभावनाओं की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर :– किसी अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसाधनों की मात्रा तथा उपलब्ध प्रौद्योगिकीय ज्ञान के द्वारा उत्पादित की जा सकने वाली सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के सभी संभावित संयोगों के समुह को अर्थव्यवस्था की उत्पादन संभावनाएं कहते है।

प्रश्न.8 समष्टि अर्थशास्त्र क्या है ?
उत्तर :– अर्थशास्त्र की वह शाखा जिसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के आय के स्तर ,रोजगार के स्तर,कीमत का स्तर आर्थिक वृद्धि व विकास में उतार चढ़ाव इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न.9 व्यष्टि अर्थशास्त्र क्या है ?
उत्तर :– व्यष्टि अर्थशास्त्र,अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमे विशेष फर्मो,विशेष परिवारों,व्यक्तिगत कीमतों,मजदूरी ,आय,व्यक्तिगत उद्योगों या विशिष्ट वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न.10 अर्थव्यवस्था कितने प्रकार की हो सकती है ?
उत्तर :– 1. केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था – चीन,क्यूबा,वियतनाम
2. बाजार अर्थव्यवस्था – अमेरिका,बिट्रेन,जर्मनी,रूस
3.मिश्रित अर्थव्यवस्था – भारत,पाकिस्तान,श्रीलंका

प्रश्न.11 बाजार अर्थव्यवस्था का मुख्य उद्देश्य क्या होता है ?
उत्तर :– आर्थिक लाभ कमाना बाजार अर्थव्यवस्था का मुख्य उद्देश्य होता है।

CBEOBHINDER

प्रश्न.12 बाजार अर्थव्यवस्था में उत्पादन,विनिमय तथा उपभोग सम्बन्धी निर्णय किस प्रकार होता है ?

उत्तर :– बाजार अर्थव्यवस्था में उत्पादन,विनिमय तथा उपभोग सम्बन्धी निर्णय बाजार व्यक्तियों अर्थात मांग एवं पूर्ति को व्यक्तियों से होता है।

प्रश्न.13 सकारात्मक आर्थिक विश्लेषण तथा आदर्शक आर्थिक विश्लेषण का महत्व लिखिए।

उत्तर :– सकारात्मक आर्थिक विश्लेषण – इस विश्लेषण से अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति तथा आर्थिक गतिविधियों का मूल्यांकन भी होता है।

प्रश्न.14 उत्पादन संभावना सेट किसे कहते है ?

उत्तर :– उपलब्ध संसाधनों की मात्रा तथा उपलब्ध प्रौद्योगिकीय ज्ञान के द्वारा उत्पादित की जा सकने वाली सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के सभी संभावित संयोगों के समूह से है।

प्रश्न.15 केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था के भेद को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :–

केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था	बाजार अर्थव्यवस्था
1. अर्थव्यवस्था के सभी क्रियाकलाप सरकार अथवा केन्द्रीय सता द्वारा निर्धारित होते है।	इसमें अर्थव्यवस्था के लगभग सभी आर्थिक गतिविधियां बाजार द्वारा निर्धारित होते है।
2. इसमें कीमतें सरकार द्वारा निर्धारित होती है।	इसमें कीमतें बाजार की मांग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।

प्रश्न.16 Micro and Macro शब्द की उत्पति किस भाषा से हुई ।

उत्तर :– Micro and Macro शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा से हुई।

प्रश्न.17 व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत लिखिए।

उत्तर :– व्यष्टि अर्थशास्त्र,कीमत अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र सामान्य आय व रोजगार का सिद्धांत के नाम से जाना जाती है।

प्रश्न.18 उत्पादन संभावना वक्र का रेखाचित्र बनाइए।

उत्तर :–

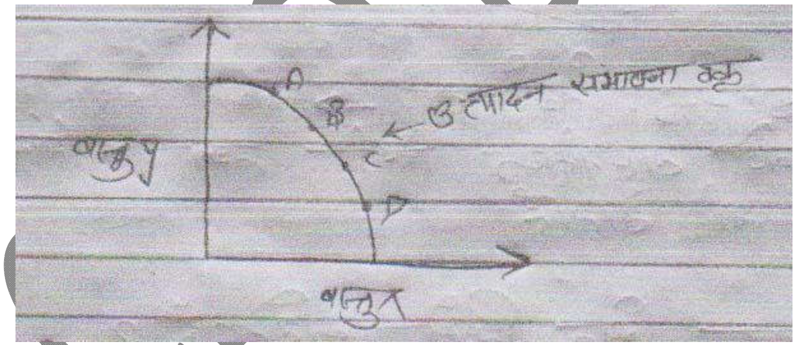

प्रश्न.19 आर्थिक नियोजन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर :– आर्थिक नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें उपलब्ध साधनों तथा निर्धारित उद्‌देश्यों की पूर्ति को ध्यान में रखकर आर्थिक निर्णय लिए जाते है।

प्रश्न.20 व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर लिखिए।

उत्तर :–

व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1. इसमें व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयो का अध्ययन किया जाता है।	इसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का व्यापक एवं समग्र के रूप में अध्ययन किया जाता है।
2. इसमें वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत	इसमें आर्थिक सिद्धांतों का लक्ष्य राष्ट्रीय

BHINDER

निर्धारण एवं विभिन्न उपभोगों में आवंटन का अध्ययन होता है	आय के स्तर व साधनों के समग्र उपयोग को निर्धारित करने का अध्ययन किया जाता है।
3.यह कीमत विश्लेषण से सम्बन्धित है	यह आय विश्लेषण से सम्बन्धित है
4.यह व्यक्तिगत फर्मो,उद्योगों व उत्पादन इकाईयों में उतार चढ़ाव का अध्ययन करता है।	यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के उतार–चढ़ाव आर्थिक मंदी,आर्थिक तेजी का अध्ययन करता है।
5.यह व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान एवं नीति उपलब्ध कराता है।	यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की समस्या के समाधान एवं उचित नीति उपलब्ध कराता है।

CBEO BHINDER

अध्याय – 2

उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत

प्रश्न. 1 कुल उपयोगिता किसे कहते है ?

उत्तर :– एक वस्तु की एक निश्चित मात्रा से प्राप्त उपयोगिता का योग है। जो किसी की गई मात्रा को उपभोग करने से प्राप्त होती है।

प्रश्न. 2 ह्यसमान सीमांत उपयोगिता नियम क्या है ?

उत्तर :–ह्यसमान सीमांत उपयोगिता का नियम बताता है कि वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई कम सीमांत उपयोगिता प्राप्त करती है।

प्रश्न. 3 क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण क्या है?

उत्तर :– उपभोक्ता उपयोगिता को संख्या में नहीं माप सकता हैं, यह विश्लेषण विभिन्न उपभोक्ता बंड़लों को क्रम दता है।

प्रश्न. 4 सीमान्त प्रतिस्थापन दर क्या है ?

उत्तर :– एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए, कुछ उपयोगिता को स्तर समान रखते हुए ,इसकी वस्तु की वह मात्रा जिका उपभोक्ता को त्याग करना पड़ता है।

प्रश्न. 5 अनअधिमान वक्र क्या है ?

उत्तर :– वह वस्तु हैं जिसमे उन सभी बंड़लों के बिन्दुओं का जोड़ करना होता है जिन पर उपभोक्ता बड़ंलों को कम देता है।

प्रश्न. 6 बजट सेट एवं बजट रेखा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :– वस्तुओं की विद्यमान कीमतों तथा अपनी आय के अनुसार उपभोक्ता कोई भी बंड़ल उसी सीमा तक खरीद सकता है,जब तक उसकी कीमत उसकी आय के बराबर या उससे कम रहें, इसे बजट प्रतिबन्ध कहते है तथा उपभोक्ता के लिए उपलब्ध बजटों के सेट को बजट सेट कहते है।

बजट रेखा – बजट रेखा उस रेखा को कहते है जिस पर स्थित विभिनन बंड़लों की लागत उपभोक्ता की आय के बराबर होतो है।

प्रश्न. 7 बजट रेखा की प्रवणता नीचे की ओर क्यों होती है ?

उत्तर :– बजट रेखा की ढ़ाल अथवा प्रवणता नींचे की ओर अथवा ऋणात्मक होती है। इसका कारण है कि उपभोक्ता की आय सीमित होती है तथा यदि उपभोक्ता दो वस्तुओं में से किसी वस्तु का उपभोग बढ़ाना चाहता है तो उसे दूसरी वस्तु का उपभोग अवश्य ही कम करना होगा क्योंकि उसकी आय सीमित है।

CBEO BHINDER

प्रश्न. 8 एक उपभोक्ता दो वस्तुओं का उपभोग करने के लिए इच्छुक है। दोनों वस्तुओं की कीमत क्रमशः 4 रू. तथा 5 रू. है उपभोक्ता की आय 20 रू. है–

1. बजट रेखा के समीकरण को लिखिए।
2. उपभोक्ता यदि अपनी सम्पूर्ण आय वस्तु 1 पर व्यय कर दे तो वह उसकी कितनी मात्रा का उपभोग कर सकता है ?
3. यदि वह अपनी सम्पूर्ण आय वस्तु 2 पर व्यय कर दे तो वह उसकी कितनी मात्रा का उपभोग कर सकता है ?
4. बजट रेखा की प्रवणता क्या है ?

उत्तर :– 1. बजट रेखा की प्रवणता का समीकरण – माना दो वस्तुएं x_1 तथा x_2 है तब समीकरण अग्र प्रकार होगा – $P_1x_1 + P_2x_2 = m$

$$4x_1 + 5x_2 = 20$$

2. उपभोक्ता की आय = 20

प्रथम वस्तु (1) की कीमत = 4 रू.

यदि उपभोक्ता अपनी संपूर्ण आय वस्तु 1 पर व्यय करें तो वह वस्तु 1 की निम्न मात्रा उपभोग करेगा — = $\frac{\text{उपभोक्ता की कुल आय}}{\text{प्रथम वस्तु की कीमत}}$

= $\frac{20}{4}$ = 5 इकाई

3. उपभोक्ता की कुल आय = 20

द्वितीय वस्तु की कीमत = 5

यदि उपभोक्ता अपनी संपूर्ण आय वस्तु 2 पर व्यय करें तो वह वस्तु 2 कि निम्न मात्रा उपभोग करेगा

= $\frac{\text{उपभोक्ता की कुल आय}}{\text{द्वितीय वस्तु की कीमत}}$

= $\frac{20}{4}$ = 5 इकाई

4. बजट रेखा की प्रवणता = P_1 / P_2

= 4 / 5 = - 0.8

बजट रेखा की प्रवणता नीचे की ओर अर्थात बजट रेखा का ढाल ऋणात्मक है ।

प्रश्न. 8 मान लीजिए कि बाजार में एक ही वस्तु के लिए 2 उपभोक्ता हैं तथा उनके मांग फलन इस प्रकार

$d_1(P) = 20 - P$ किसी भी ऐसी कीमत के लिए जो 20 से कम या बराबर हो और

CBEO BHINDER

$d_1(P) = 0$ किसी ऐसी कीमत के लिए जो 20 से अधिक हो

$d_2(P) = 30 - 2P$ किसी भी ऐसी कीमत के लिए जो 15 से कम हो या बराबर हो तथा

$d_1(P) = 0$

किसी ऐसी कीमत के लिए जो 15 से अधिक हो ,बाजार मांग फलन ज्ञात कीजिए –

उत्तर :– $d_1(P) = 20 - P$, जब $P < 20$ हो ------- (1)

$d_1(P) = 0$, जब $P > 20$ हो

$d_2(P) = 30 - 2P$, जब $P \leq 15$ हो

$d_2(P) = 0$, जब $P > 15$ हो

बाजार मांग फलन = समीकरण (1) + समीकरण (2)

$dm(P) = 20 - P + 30 - 2P$

$dm(P) = 50 - 3P$, जब $P \leq 15$ हो

$dm(P) = 0$, जब $P > 15$ हो ¡

प्रश्न. 10 निम्न तालिका में वस्तु की बाजार मांग ज्ञात कीजिए।

वस्तु की कीमत (P)	10	20	30	40	50
मांग मात्रा (फर्म A) d_1	110	95	87	95	50
मांग मात्रा (फर्म B) d_2	200	170	160	145	130
मांग मात्रा (फर्म C) d_3	250	230	220	200	180
बाजार मांग ($d_1 + d_2 + d_3$)					

उत्तर :– बाजार मांग ($d_1 + d_2 + d_3$) =

वस्तु की कीमत	10	20	30	40	50
बाजार मांग	560	495	467	420	360

प्रश्न. 11 सामान्य वस्तुएं एवं निम्न वस्तुएं क्या है ?

उत्तर :– सामान्य वस्तुएं

वे वस्तुएं जिनकी मांग मात्रा आयें बढने के साथ बढ़ती है तथा आय कम होने से मांग मात्रा घटती है। सामान्य वस्तुएं कहलाती है।

निम्न वस्तुएं

वे वस्तुएं जिनकी मांग मात्रा आय बढ़ने के साथ कम होती है तथा आय कम होने पर मांग मात्रा बढ़ती है तो निम्न स्तरीय

CBEO BHINDER

वस्तु कहलाती है। उदा. मोटा अनाज

प्रश्न. 12 स्थानापन्न वस्तुएं व पूरक वस्तुओं को स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–

स्थानापन्न वस्तुएं	पूरक वस्तुएं
वे वस्तुएं जिनका उपभोग एक दूसरे के स्थान पर किया जा सकता है। स्थानापन्न वस्तुएं कहलाती है।उदा.चाय व कॉफी	वे वस्तुएं जिनका उपभोग साथ–साथ किया ,पूरक वस्तुएं कहलाती है। उदा. चाय व चीनी, कलम व स्याही

प्रश्न. 13 मांग का नियम क्या है ?

उत्तर :– मांग के नियम के अनुसार अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उसे वस्तु की मांग मात्रा घटती है एवं वस्तु की कीमत में कमी होने पर वस्तु की मांग मात्रा बढ़ती जाती है। मांग का नियम वस्तु की कीमत तथा मांग मात्रा में सम्बन्ध व्यक्त करता है।

प्रश्न. 14 मांग मात्रा मे परिवर्तन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :– मांग मात्रा में परिवर्तन वस्तु की कीमत पर निर्भर करता है।

$Q \propto \frac{1}{P}$ अथवा मांग मात्रा $\propto \frac{1}{Price}$

मांग मात्रा में परिवर्तन दो प्रकार से होता है।

1. मांग में विस्तार 2. मांग में संकुचन

प्रश्न. 14 मांग मात्रा में परिवर्तन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :– 1.मांग का विस्तार – वस्तु की कीमत में कमी होने से वस्तु की मांग में वृद्धि होती है ,इसे मांग का विस्तार कहते है।

उदाहरण :–

वस्तु की कीमत	वस्तु की मांग मात्रा इकाई में
100	250
75	500
50	750
25	1000

CBEOBHINDER

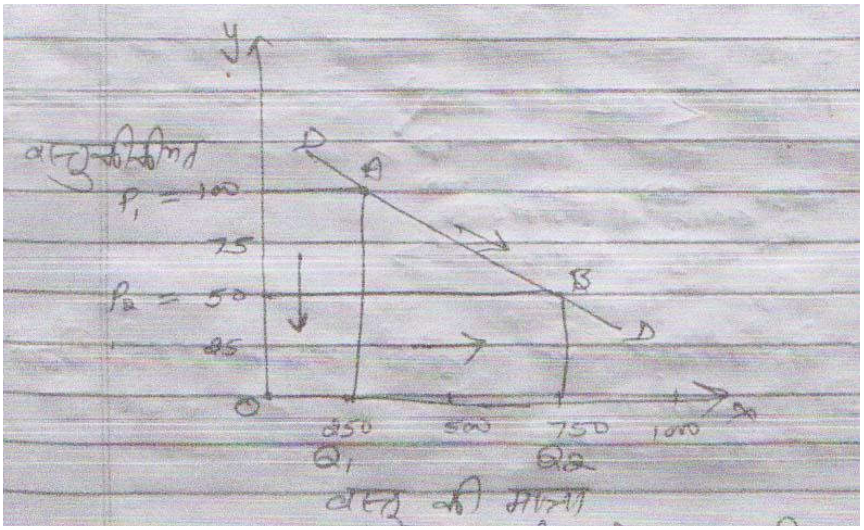

कीमत में परिवर्तन से वस्तु की मांग की दिशा में परिवर्तन

2.मांग में संकुचन – वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से वस्तु की मांग मात्रा में कमी होती है इसे मांग में संकुचन कहते है।

वस्तु की कीमत	वस्तु की मांग मात्रा इकाई में
25	1000
50	750
75	500
100	250

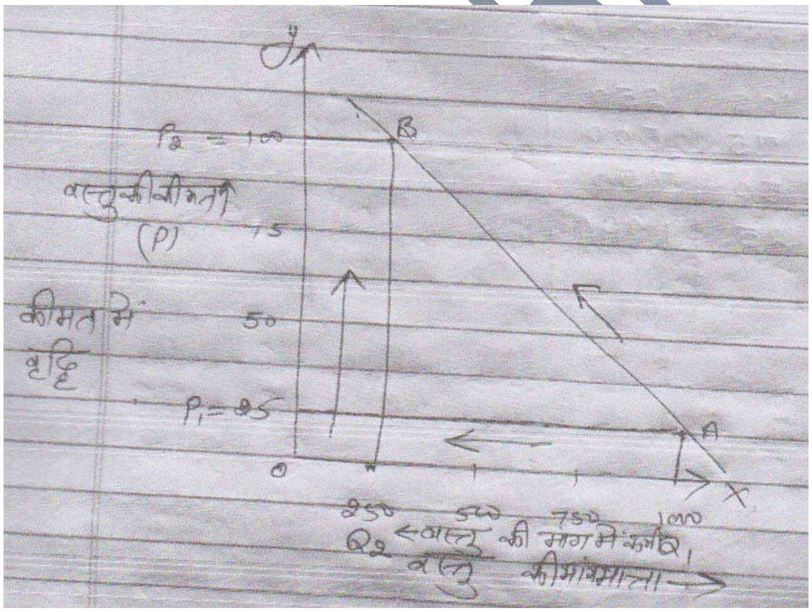

कोमत में परिर्वतन से वस्तु की मांग मात्रा की दिशा में परिवर्तन

BHINDER

प्रश्न. 16 मांग वक्र क्या है ?

उत्तर :— मांग वक्र वस्तु की विभिन्न कीमतों पर मांग मात्रा को व्यक्त कर सम्बन्ध बताता है, मांग वक्र कहलाता है।

प्रश्न. 17 मांग वक्र में शिफ्ट को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :— वस्तु की कीमत समान रहने पर एवं अन्य कारकों उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर मांग मात्रा में वृद्धि तथा उपभोक्ता की आय में कमी होने पर मांग मात्रा में कमी होती है यह मांग वक्र में शिफ्ट कहलाता है।

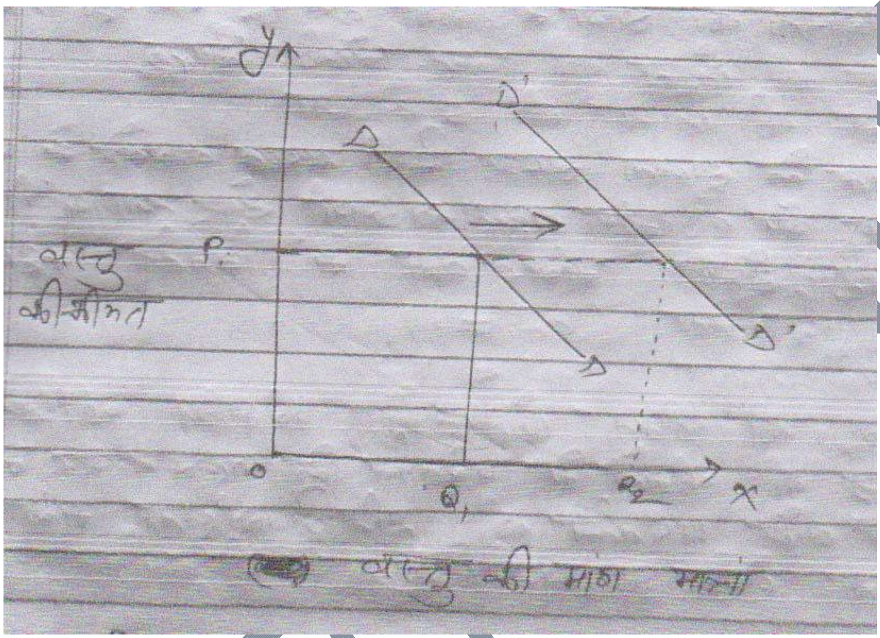

(अ) उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर मांग वक्र का दायीं ओर शिफ्ट

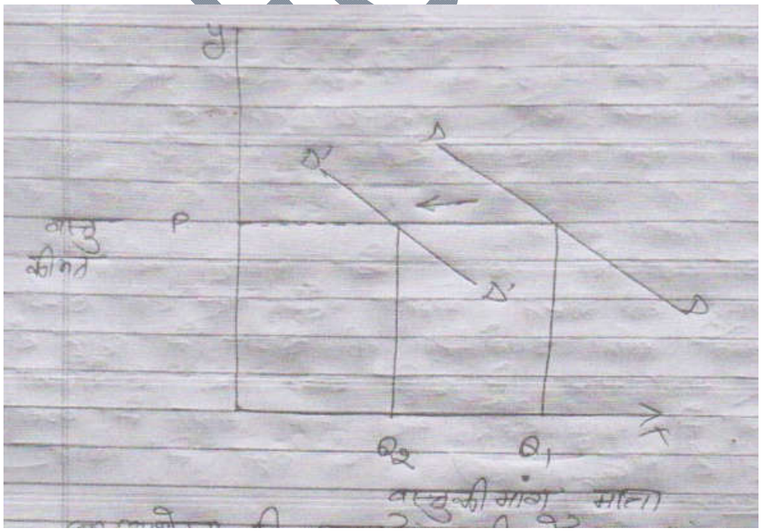

(ब) उपभोक्ता की आय में कमी होने पर मांग वक्र का बांयी ओर शिफ्ट

कीमत के अलावा अन्य किसी कारकों में परिवर्तन होने से मांग वक्र का बांयी ओर तथा दांयी ओर शिफ्ट होना मांग वक्र में विवर्तन कहलाता है।

प्रश्न. 18 मांग की कीमत लोच को परिभाषित कीजिए।

उत्तर :– वस्तु की कीमतों में परिवर्तन के फलस्वरूप मांग में होने वाले परिवर्तन की प्रति क्रियाशीलता मांग की कीमत लोच कहलाती है।

प्रश्न. 19 मांग की कीमत लोच ज्ञात करने का सूत्र लिखिए।

उत्तर :– ed = वस्तु की मांग में प्रतिशत परिवर्तन/वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन

$$= \frac{\Delta Q/Q \ X \ 100}{\Delta P/P \ X100}$$

$$= \frac{\Delta Q \ X \ P}{Q \ X \Delta P}$$

प्रश्न. 20 मांग की लोच ऋणात्मक क्यों होती है ?

उत्तर:– मांग की लोच ऋणात्मक होती है,क्योंकि वस्तु की कीमत व उसकी मांगी जाने वाली संबंध प्रतिलोम होता है।

प्रश्न. 21 एक वस्तु की 4 रूपये की कीमत पर वस्तु की मांग 25 इकाईयां है,वस्तु की कीमत बढ़कर 5 रूपए हो जाती है तब परिणामस्वरूप वस्तुक की मांग घटकर 20 इकाइयाँ हो जाती है ।माँग की कीमत लोच की गणना कीजिए।

उत्तर :– ed= $\frac{\Delta Q}{Q} \ x \ \frac{P}{\Delta P}$

p_1= 4 रू. p_2= 5 रू.

Q_1= 25 रू. Q_2= 20 इकाइयां

$\Delta Q = \frac{Q2-Q1}{Q1}$ $\Delta Q = \frac{P2-P1}{P1}$

$= \frac{20-25}{25}$ $= \frac{5-4}{4}$

CBEO BHINDER

$= \frac{-5}{25}$ $= \frac{1}{4}$

$Ed = \frac{-5/25}{1/4}$

$Ed = \frac{-5}{25} x \frac{4}{1}$

$Ed = \frac{-20}{25}$

$Ed = \frac{-4}{5}$

Ed= -0.8

प्रश्न. 22 मांग की लोच की कितनी श्रेणियाँ है ?

उत्तर :–मांग की लोच की 5 श्रेणियां

1. पूर्णतया लोचदार (ed=∞)
2. लोचदार (ed > ∞)
3. इकाई लोच (ed = 1)
4. बेलोचदार प्रश्न. 23
5. शून्य लोच (ed = 0)

प्रश्न. 23 मांग की पूर्णतया लोचदार श्रेणी का रेखाचित्र बनाईए।

उत्तरः–

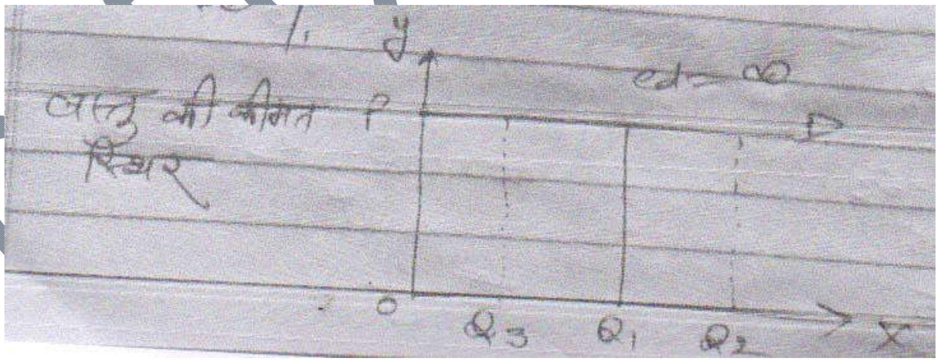

प्रश्न. 24 मांग की इकाई लोच को समझाइये।

उत्तर :– जब मांग का अनुपातिक परिवर्तन कीमत के आनुपातिक परिवर्तन के बराबर होता है।

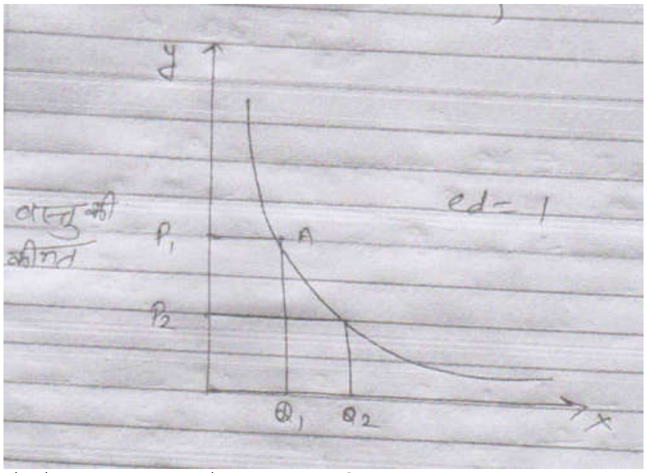

प्रश्न. 25 बेलोचदार मांग को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :– जब मांग का आनुपातिक परिवर्तन कीमत के आनुपातिक परितर्वन से कम होता है। उस स्थिति में मांग की लोच एक से कम होती है। (ed = 1)

प्रश्न. 26 शून्य (ed = 0)लोच से क्या आशय है ?

उत्तर :– जब कीमत के परिवर्तन से मांग पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता है तो ऐसी स्थिति में शून्य लोच होती है। इस स्थिति में मांग y वक्र अक्ष के समान्तर होता है।

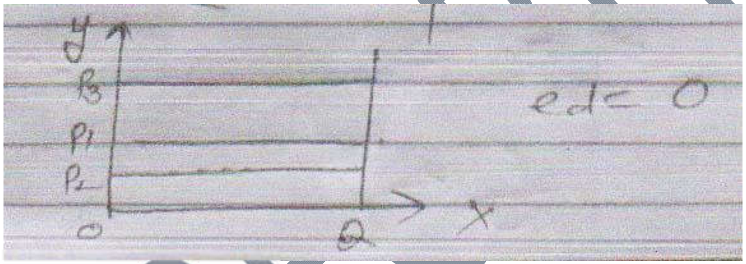

प्र.1 उत्पादन से क्या आशय है ?

उ.- उत्पादन से आशय किसी वस्तु की उपयोगिता का सृजन करना या निर्माण करना उत्पादन कहलाता है !

प्र. 2 उत्पादन के साधन कोन-कोनसे है ?

उ. -भूमि, श्रम, पूंजी, तकनीक व प्रबंधन , उघमशीलता या साहस !

प्र. 3 आदा (पड़ते) व प्रदा (निर्गत) किसे कहते है ?

उ.- आदा – उत्पादन के साधनों को आदा या पड़ते कहते है

प्रदा – वस्तुओ व सेवाओ के उत्पादन को प्रदा या निर्गत कहते है ।

प्र. 4 पूंजी प्रधान तकनीक किसे कहते है ?

उ.- जब श्रम की तुलना में पूंजी का अधिक उपयोग किया जाता है , उसे पूंजी प्रधान तकनीक कहते है

प्र. 5 कुल उत्पाद , ओसत उत्पाद एव सीमान्त उत्पाद की अवधारणा को रेखाचित्र द्वारा समझाइये !

उ.- **(A)** <u>कुल उत्पादन (TP)</u> - किसी निशिचत समयावधि में उत्पादन के समस्त साधनों से जो उत्पादन प्राप्त होता है उसका योग कुल उत्पादन कहलाता है।

$TP=\sum MP$ या $TP=AP \times L$

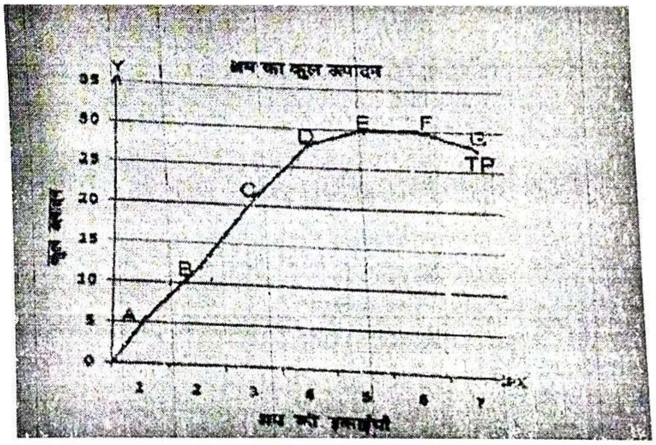

कुल उत्पादन बढ़ती दर से बढ़ता है कभी समान दर से और कभी घटती हुई दर से घटता है तथा अन्त में

(B) **ओसत उत्पादन (AP)** – कुल उत्पादन में परिवर्तनशील साधन की इकाईयों की संख्या का भाग देने पर जो उत्पाद प्राप्त होता है, औसत उत्पाद कहलाता है।

$$AP = TP/L$$

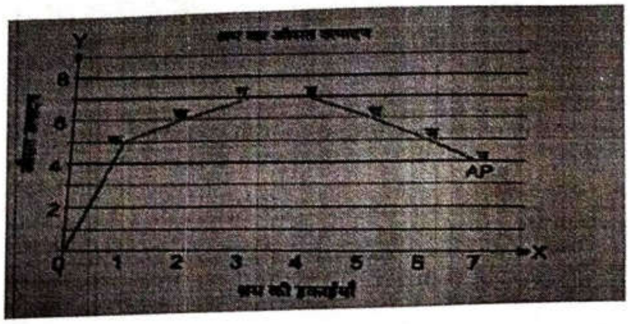

उत्पादन के स्थिर साधनों से प्रारभ में अच्छा ताल मेल होने के कारण यह एक सीमा तक बढता है तथा बाद में गिरने लगता है।

(c) **सीमान्त उत्पादन (MP)** – किसी उत्पादन के परिवर्तनशील साधन की एक इकाई में परिवर्तन करने से कुल उत्पादन में जो परिवर्तन आ जाता है , सीमान्त उत्पाद (MP) कहलाता है।

$$MP = \Delta TP/\Delta L$$ या $$MP = TP_n - TP_{n-1}$$

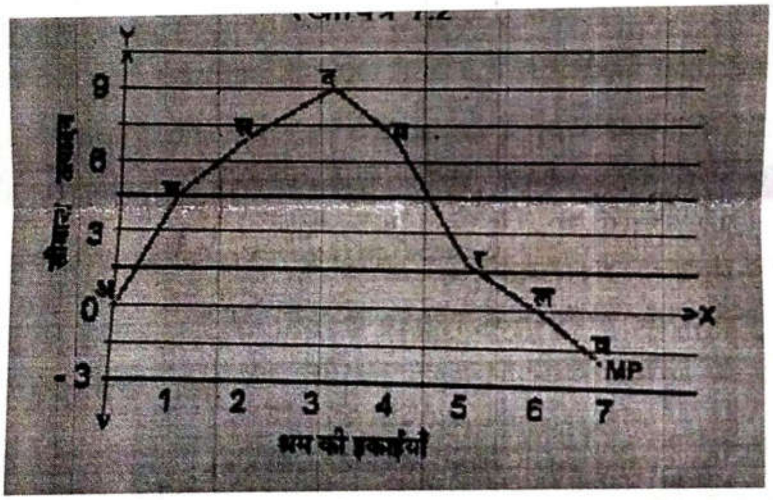

साधनों (स्थिर व परिवर्तनशील) के सामंजस्य से MP प्रारभ में बढता है तथा सामंजस्य समाप्त होने पर MP घटता है और अन्ततः ऋणात्मक हो जाता है।

प्र.1 निम्न तालिका में दी गई सूचनाओ की सहायता से ओसत उत्पाद एव सीमान्त उत्पात की गणना किजिये

श्रम की इकाईया	1	2	3	4	5	6	7
कुल उत्पाद	10	30	60	80	90	90	84

उ.-

श्रम की इकाईया	कुल उत्पाद	ओसत उत्पाद TP/L	सीमान्त उत्पाद ΔTP/ΔL
1	10	10	-
2	30	15	30-10=20
3	60	20	60-30=30
4	80	20	80-60=20
5	90	18	90-80=10
6	90	15	90-90=0
7	84	12	84-90= -6

अध्याय – 8 लागत की अवधारणा

प्र.1 लागत का अर्थ लिखिये?

उ.- कोई भी फर्म अपनी वस्तु का उत्पादन करने में जिन आगतो का प्रयोग किया जाता है उन पर होने वाले व्ययों को ही लागत कहते है।

प्र. 2 सामाजिक लागतें किसे कहते हैं ?

उ. – सामाजिक लागतो में वे सभी त्याग व कष्ट शामिल किये जाते है जिन्हें समाज उत्पादन के दोरान परोक्ष रूप से वहन करता है , जेसे – प्रदुषण , धुल , धुआ , शोरगुल आदि के कारण स्वास्थ्य को हानि।

प्र.– 3 अवसर लागत से आप क्या समझते है ?

उ. – एक वस्तु की अवसर लागत उस वस्तु के उत्पादन के स्थान पर अन्य वस्तु के उत्पादन की गवाई या त्यागी गई मात्रा अवसर लागत कहलाती है।

प्र.–4 उत्पादन के साधनों के उपयोग की कीमत बताइये

उ.-

उत्पादन के साधन		प्रतिफल (कीमत)
1 . भूमि	–	लगान
2 . पूंजी	–	ब्याज
3 . श्रम	–	मजदूरी
4 . प्रबंधन	–	वेतन
5 . उद्यमी	–	लाभ

प्र.5 व्यक्त एव अव्यक्त लागतें क्या है ?

उ.- **<u>1. स्पष्ट या व्यक्त</u>** लागतें – वे लागतें जो एक फर्म के लेखे या हिसाब –किताब में शामिल की जाती है या लिखी जाती है , उन्हें स्पष्ट या व्यक्त लागतें कहते है , जेसे –

1 . कच्चे माल पर व्यय 2. ब्याज का भुगतान 3. मजदूरी का भुगतान

2. अस्पष्ट या अव्यक्त लागतें – वे लागतें जो एक फर्म के लेखे या हिसाब –किताब में शामिल नहीं की जाती है या लिखी नहीं जाती है , उन्हें अस्पष्ट या अव्यक्त लागतें कहते है। जेसे – 1.स्वय की पूंजी 2.स्वय के फर्नीचर व गाडी का मूल्य

प्र. 6 कोनसा वक्र लिफाफा वक्र कहलाता है ?

उ.– "दीर्घकालीन औसत लागत वक्र" (LAC)

प्र.7 सीमान्त लागत का सूत्र लिखिये ?

उ.– $MC = \Delta TC/\Delta Q$

ΔTC = कुल लागत में परिवर्तन

ΔQ = उत्पादन मात्रा में परिवर्तन

प्र.8 कुल स्थिर लागत , कुल परिवर्ती लागत व कुल लागत की अवधारणाओ को समझाइये

उ.– **(1) कुल स्थिर लागत (TFC) –** ऐसी लागतें जो उत्पादन की मात्रा में वृद्धि या कमी होने पर तथा उत्पादन के शून्य होने पर भी लागतें स्थिर रहती है , उसे कुल स्थिर लागत कहते है , जेसे – भवन या फैक्ट्री का किराया , कर्मचारियों का वेतन, बीमा प्रीमियम की राशी , नगर निगम के कर, पूंजी पर ब्याज, भूमि का लगान आदि।

(2) **कुल परिवर्ती लागत (TVC) –** ऐसी लागतें उत्पादन के बढने पर बढती, घटने पर घटती तथा शून्य होने पर शून्य हो जाती है अर्थात् उत्पादन की मात्रा के साथ साथ बदलती रहती है , उसे कुल परिवर्ती लागतें कहा जाता है। जेसे – कच्चेमाल का मूल्य , बिजली व पानी पर किया गया खर्च , श्रमिकों की मजदूरी , ईंधन व्यय आदि !

(3). **कुल लागत (TC) –**

अल्पकाल में कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्ती लागत के योग को कुल लागत कहते है।

TC = TFC ± TVC

रेखाचित्र में TC वक्र TFC वक्र व TVC व्रक का योग होता है ।

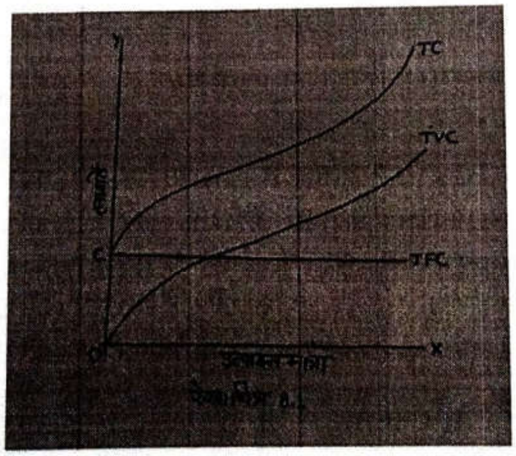

प्र.9 निम्न तालिका से लागत की अवधारणाओ को सूत्र की सहायता से गणना कीजिये।

Q.	TFC	TC	TVC	AFC	AVC	SAC	SMC
0	20	20					
1	20	30					
2	20	38					
3	20	44					
4	20	49					
5	20	53					
6	20	59					

उ. –

Q.	TFC	TC	TVC (TC-TFC)	AFC (TFC / Q)	AVC (TVC / Q)	SAC (AFC + AVC)	SMC ($\Delta TC/\Delta Q$)
0	20	20	0	-	-	-	-
1	20	30	10	20	10	30	10
2	20	38	18	10	9	19	8
3	20	44	24	6.67	8	14.67	6
4	20	49	29	5	7.25	12.25	5
5	20	53	33	4	6.6	10.6	4
6	20	59	39	3.34	6.5	9.84	6

उच्च माध्यमिक परीक्षा मॉडल प्रश्न पत्र 2022

कक्षा 12 वीं　　　　　　　　प्रश्न बैंक　　　　　　　　अंक भार　8

विषय :– अर्थशास्त्र

इकाई 4 :– पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धांत विषय विशेषज्ञ डा.अनुभा शर्मा व्याख्याता(अर्थशास्त्र) रा.उ.मा.वि.,माल की टूस

प्रश्न.1 पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार की दो विशेषताएं लिखों।

उत्तर :– 1. बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की अत्यधिक संख्या

2. समरूप वस्तुओं का उत्पादन

प्रश्न.2 पूर्ण प्रतिस्पर्धा बाजार में फर्म का मांग वक्र कैसा होता है ?

उत्तर :– पूणतया लोचदार

प्रश्न.3 आगम को परिभाषित कीजिए?

उत्तर :– फर्म द्वारा उत्पादन बेचने से प्राप्त राशि

प्रश्न.4 एक फर्म कौनसे बाजार में कीमत स्वीकारक होती है ?

उत्तर :– पूर्ण प्रतिस्पर्धा

प्रश्न.5 पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म की कीमत रेखा कैसी होती है ?

उत्तर :– क्षैतिज अक्ष के समान्तर

प्रश्न.6 कुल संप्राप्ति ज्ञात करने का सूत्र लिखो ?

उत्तर :– कुल संप्राप्ति = वस्तु की कीमत x फर्म का निर्गत

प्रश्न.7 पूर्ति से आप क्या समझते है ?

उत्तर :– पूर्ति वस्तु की वह मात्रा है जो बाजार में किसी निश्चित समय पर विभिन्न कीमतों पर बेचने के लिए प्रस्तुत की जाती है।

प्रश्न.8 अवसर लागत क्या है ?

उत्तरः– किसी आगत की अवसर लागत उसके दूसरे सर्वश्रेष्ठ प्रयोग से प्राप्त हो सकने वाला त्यागा गया लाभ है।

प्रश्न.9 कीमत रेखा को रेखाचित्र से समझाइये।

उत्तरः–

प्रश्न.10 बाजार पूर्ति क्या है ?

उत्तरः– बाजार में सभी फर्मों द्वारा विभिन्न कीमतों पर बेची जाने वाली मात्रा बाजार पूर्ति है।

प्रश्न.11 पुर्ति की कीमत लोच का सूत्र लिखे।

उत्तर :– कीमत लोच = पूर्ति की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन / कीमत में प्रतिशत परिवर्तन

प्रश्न.12 सामान्य लाभ से क्या अभिप्राय है।

उत्तर :– वह लाभ स्तर जो केवल स्पष्ट लागतों और अवसर लागतों को पूरा कर सकें।

प्रश्न.13 अधिसामान्य लाभ क्या है ?

उत्तर :– वह लाभ जो एक फर्म सामान्य लाभ से उवर अर्जित करें।

प्रश्न.14 किसी फर्म के पूर्ति वक्र के कोई दो निर्धारक तत्वों के नाम लिखो।

उत्तर :– 1. प्रौद्योगिकी प्रगति 2. आगत कीमतें 3. इकाई कर

CBEO BHINDER

प्रश्न.15 इकाई कर से किसी फर्म के पर्ति वक्र पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
उत्तर :– पूर्ति वक्र बायीं और शिफ्ट होता है।
प्रश्न.16 पूर्ति वक्र के दायीं ओर खिसकने का एक कारण बताइयें ?
उत्तर :– प्रौद्योगिकीय प्रगति
प्रश्न.17 साम्य कीमत/संतुलन कीमत क्या है।
उत्तर :– संतुलन कीमत वह है जा बाजार मांग एवं पूर्ति की ‘ शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है और ये वह है जहाँ बाजार मांग और पूर्ति दोनों बराबर होती है।
प्रश्न.18 पूर्ति का नियम किसे कहते है?
उत्तर :– अन्य बाते समान रहने पर कीमत बढ़ने पर वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है तथा वस्तु की कीमत घटने पर वस्तु की पूर्ति घट जाती है।
प्रश्न.19 पूर्ति में विस्तार को रेखा चित्र द्वारा समझाइये।
उत्तर :–

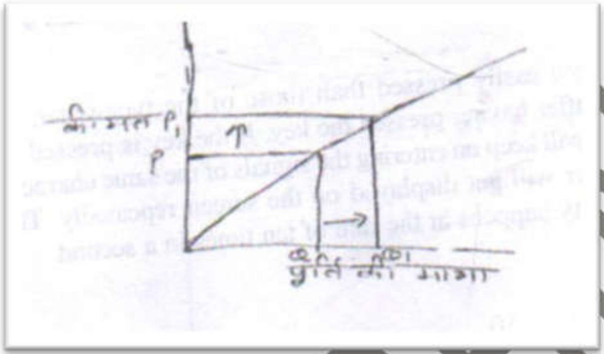

प्रश्न.20 पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म के साम्य निर्धारण की सीमान्त आगम और सीमान्त लागत की शर्त बताइये।
उत्तर :– 1. MR=MC
2. साम्य बिन्दु पर फर्म का सीमान्त लागत वक्र MC उसके सीमान्त आगम वक्र को नीचे से काटना हुआ उपर की ओर बढे।
प्रश्न.21 पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म के साम्य निर्धारण को चित्र द्वारा समझाइयें।
उत्तर :–

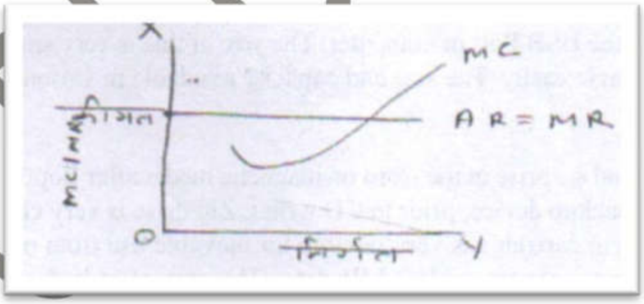

प्रश्न.22 बाजार में फर्मों की संख्या में वृद्धि,बाजार पूर्ति वक्र को किस प्रकार प्रभावित करती है?
उत्तर :– बाजार पूर्ति वक्र दायीं और शिफ्ट हो जाता है।
प्रश्न.23 पूर्णयता लोचदार पूर्ति वक्र को दशाइये ?

उत्तर :–

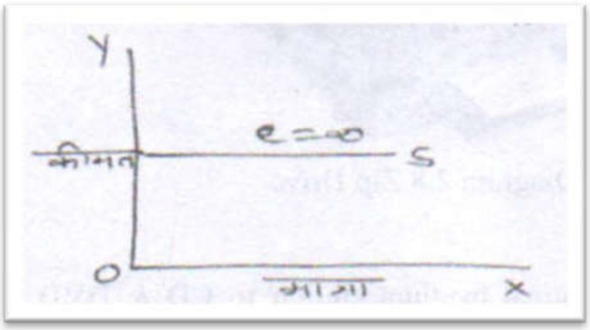

CEO BHINDER

प्रश्न.24 इकाई से अधिक es > | वक्र को दर्शाइये ?

उत्तर :–

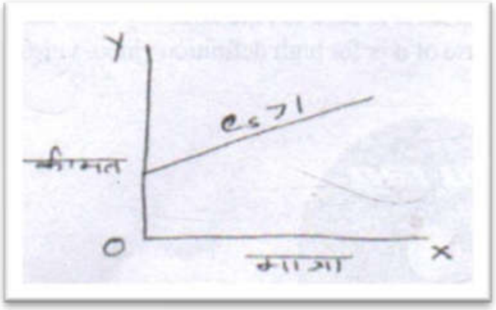

प्रश्न.25 इकाई से कम es < | वक्र को दर्शाइये ?

उत्तर :–

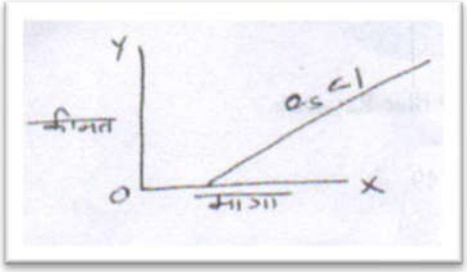

प्रश्न 26 पूर्ति में कमी से क्या समझते है ?

उत्तर :– वस्तु की स्थिर कीमत रहने पर यदि वस्तु की पूर्ति पहले से कम हो जाती है, इसे पूर्ति में कमी कहते है।

प्रश्न 27 पूर्ति में वृद्धि को रेखाचित्र की सहायता से दर्शाइये ?

उत्तर :–

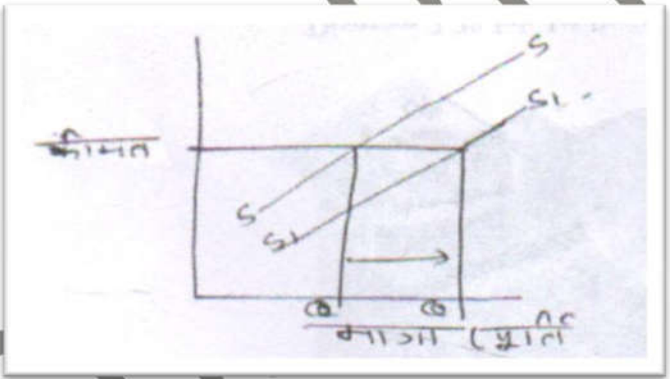

प्रश्न 28 अल्पकाल में पूर्ण प्रतियोगिता में सामान्य लाभ को दर्शाइये ?

उत्तर :–

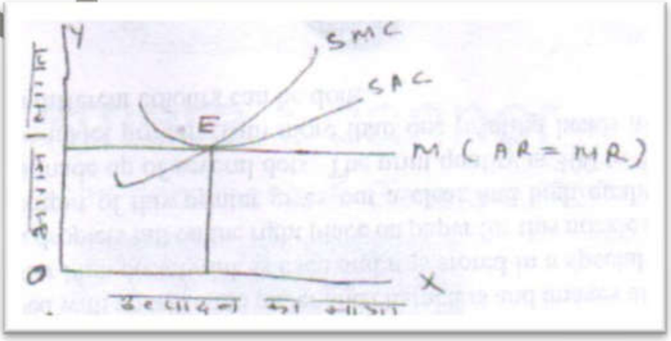

प्रश्न 29 पूर्ति की कीमत लोच को ज्यामिति विधि से समझाइयें।

उत्तर :–

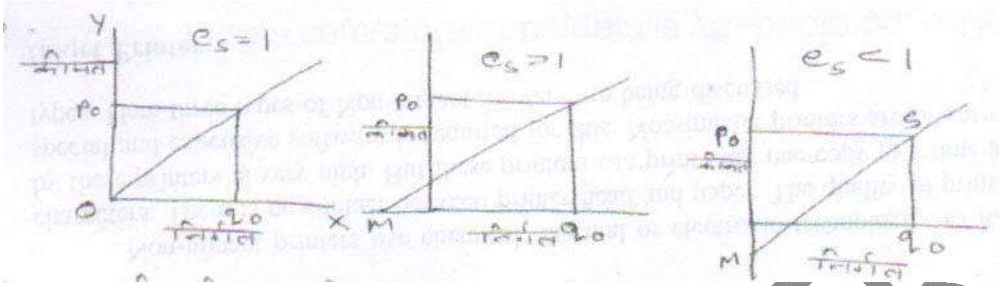

प्रश्न 30 X की कीमत में 20 प्रतिशत की कमी होने परइसकी पूर्ति 500 इकाई से घटकर 450 इकाई हो जाती है। पूर्ति की कीमत लोच को ज्ञात करें।

उत्तर :– कीमत में परिवर्तन = 20 %

पूर्ति में परिवर्तन $= \frac{50}{500} \times 100 = 10\%$

पूर्ति की कीमत लोच = पूर्ति में परिर्वतन / कीमत में परिवर्तन $= \frac{10}{20} = 0.5$

CBEO BHINDER

अध्याय - 5

बाज़ार संतुलन (व्यष्टि अर्थशास्त्र)

प्र. (1) बाज़ार संतुलित स्थिति में होता है जब –

(अ) बाज़ार मांग < बाज़ार पूर्ति (ब) बाज़ार मांग > बाज़ार पूर्ति

(स)बाज़ार मांग = बाज़ार पूर्ति (द) उपरोक्त में से कोई नहीं (स)

प्र. (2) बाज़ार में किसी कीमत पर अधिपूर्ति स्थिति होती है जब –

(अ) बाज़ार मांग > बाज़ार पूर्ति (ब) बाज़ार मांग < बाज़ार पूर्ति

(स) बाज़ार मांग = बाज़ार पूर्ति (द) उपरोक्त में से कोई नहीं (ब)

प्र. (3) बाजार में किसी कीमत पर अधिमांग स्थिति होती है जब

(अ) बाजार मांग > बाजार पूर्ति (ब) बाजार मांग < बाजार पूर्ति

(स) बाजार मांग = बाजार पूर्ति (द) उपरोक्त में से कोई नही (अ)

प्र. (4) पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में (बाजार असंतुलन की स्थिति में) अधिमांग की स्थिति में वस्तु की कीमत –

(अ) कम हो जाती है

(ब) बढ़ जाती है

(स) स्थिर रहती है

(द) उपरोक्त सभी (ब)

प्र. (5) पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में अधिपूर्ण की स्थिति में वस्तु की किमत –

(अ) कम हो जाती है (ब) वृद्धि हो जाती है

(स) स्थिर रहती है (द) उपरोक्त में से कोई नही (अ)

प्र. (6) दिए गए ग्राफ में E बिंदु क्या दर्शाता है -

वस्तु की कीमत

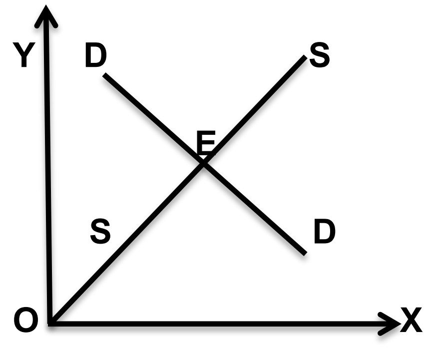

वस्तु की मात्रा

उत्तर – साम्य कीमत |

प्र. (7) वस्तु की कीमत व बाजार मांग के बीच सम्बन्ध होता है –

(अ) धनात्मक (ब) ऋणात्मक

(स) शून्य (द) उपरोक्त में से कोई नही (ब)

प्र. (8) साम्य कीमत पर संतुष्ट होते है ?

(अ) क्रेता और विक्रेता दोनों (ब) केवल क्रेता

(स) केवल विक्रेता (द) उपरोक्त में से कोई नही (अ)

प्र. (9) यदि बाजार मांग वक्र = 100-P तथा बाजार पूर्ति वक्र = 6 o+P है, तो संतुलन कीमत होगी –

(अ) 10 रुपये (ब) 20 रुपये (स) 40 रुपये (द) 30 रुपये (ब)

प्र. (10) यदि बाजार में मांग एवं पूर्ति वक्र दोनों बायीं और शिफ्ट हो जाएँ तो संतुलित मात्रा पर क्या प्रभाव पडेगा –

(अ) कमी होगी (ब) वृद्धि होगी

(स) अपरिवर्तित रहेगी (द) पहले वृद्धि फिर कमी (अ)

प्र.(11) बाजार में यदि फर्मो की संख्या स्थिर है तो मांग में वृद्धि होने पर संतुलन कीमत पर प्रभाव होगा –

(अ)संतुलन कीमत कम होगी

(ब) संतुलन कीमत में वृद्धि होगी

(स) संतुलन कीमत स्थिर होगी

(द) संतुलन किमत शून्य हो जाएगी (ब)

प्र.(12) राशनिंग का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर – एक व्यक्ति के लिए वस्तु के उपयोग की उच्चतम मात्र का निर्धारण करना |

प्र. (13)एक बाजार में फर्मी की संतुलन संख्या किस प्रकार निर्धारित होती है | जब उन्हें निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन की अनुमति हो ?

उत्तर – जब बाजार में फर्मो को निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन की अनुमति हो तो बाजार में फर्मो की संतुलन संख्या फर्मो की उस संख्या के बराबर है जो संतुलन कीमत (P_o) निर्गत पर संतुलन पूर्ति (q_o) के लिए आवश्यक है | प्रत्येक फर्म इस कीमत पर q_{of} मात्रा की पूर्ति करेगी | यदि हम n_o द्वारा फर्मो की संतुलन संख्या को दर्शाए तो फर्मो की संख्या का सूत्र निम्न होगा –

$$n_o = \frac{q_o}{q_{of}}$$

प्र.(14) फर्म एवं उद्योग को परिभाषित कीजिये –

फर्म :- फर्म एक या अधिक उत्पादन इकाइयों को कहते है जो की एक ही स्वामित्व के अंतर्गत हो |

उद्योग :- फर्मो का ऐसा समूह जो एक समान / एक सी वस्तुओं का उत्पादन कर रही हो |

प्र. (15) यदि बाजार मांग वक्र $q_D = 200 - p$ तथा बाजार पूर्ति वक्र $q_S = 140 + P$ है तो संतुलन कीमत ज्ञात कीजिये |

उत्तर - संतुलन कीमत ➢ $q_D = q_S$

$$200 - P = 140 + P$$

$$2P = 60$$

P = 30 रुपये

प्र. (16) यदि बाजार पूर्ति वक्र $q_s = 140 + P$ है तथा संतुलन कीमत **P-30** रु है तो संतुलन मात्रा ज्ञात कीजिये |

उत्तर - दिया है ➤ $q_s = 140 + P$

$P = 30$

संतुलन मात्रा = 140 + P

= 140+30

= 170

प्र.(17) यदि बाजार मांग वक्र दायीं तरफ तथा पूर्ति वक्र बायीं तरफ शिफ्ट हो जाये तो संतुलन मात्रा तथा कीमत पर क्या प्रभाव होगा ?

उत्तर - यदि बाजार मांग वक्र दायीं तरफ तथा पूर्ति वक्र बायीं तरफ शिफ्ट हो तो संतुलन कीमत में वृद्धि होगी तथा मात्रा में वृद्धि , कमी अथवा अपरिवर्तित हो सकती है |

प्र.(18) स्थिर फर्मो की संख्या की स्थिति में यदि बाजार मांग वक्र बायीं तरफ शिफ्ट हो जाये तो संतुलन कीमत तथा मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर - स्थिर फर्मो की संख्या की स्थिति में मांग वक्र के बायीं तरफ शिफ्ट होने पर संतुलन कीमत तथा मात्रा दोनों में कमी होती है |

प्र.(19) निर्बाध प्रवेश एवं बहिर्गमन की स्थिति में यदि संतुलन मात्रा (q_o) = 360 हो तथा प्रत्येक फर्म की पूर्ति (q_{of}) = 60 हो तो बाजार में अप्रमो की संतुलन संख्या ज्ञात कीजिये |

उत्तर - फर्मो की संतुलन संख्या = $\frac{q_o}{q_{of}}$ $\frac{360}{60}$ = 6 फर्म

प्र.(20) उच्चतम निर्धारित कीमत तथा निम्न्तम निर्धारित कीमत को परिभाषित कीजिये -

उत्तर – किसी वस्तु अथवा सेवा की सरकार द्वारा निर्धारित कीमत की उच्चतम सीमा को उच्चतम निर्धारित कीमत कहते है |

न्यूनतम निर्धारित कीमत = किसी वस्तु अथवा सेवा की सरकार द्वारा निर्धारित कीमत की न्यूनतम सीमा को निम्नतम निर्धारित कीमत कहते है |

प्र.(21) पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में एक फर्म की सीमांत आगम एवं वस्तु की कीमत में क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर – पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में एक फर्म की सीमांत आगम वस्तु की कीमत के बराबर होती है |

प्र.(22) यदि सरकार बाजार में वस्तु पर उत्पादन कर लगाती है तो संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर – यदि सरकार बाजार में वस्तु पर उत्पादन कर लगाती है , तो इसके परिणाम स्वरुप संतुलन कीमत में वृद्धि होगी |

प्र.(23) मान लीजिये की नमक की मांग तथा पूर्ति वक्र को इस प्रकार दिया गया है –

$$q_D = 1000 - P$$

$$q_S = 700 + 2P$$

(अ) संतुलन कीमत तथा मात्रा ज्ञात कीजिये –

(ब) अब मान लीजिये की नमक के उत्पादन के लिए प्रयुक्त एक आगत की कीमत में वृद्धि हो जाती है और नया पूर्ति वक्र है $q_S = 400 + 2P$

संतुलन कीमत तथा मात्रा किस प्रकार परिवर्तित होती है ?

क्या परिवर्तन आपकी अपेक्षा के अनुकूल है

(स) मान लीजिऐ सरकार नमक की बिक्री पर 3 रुपये प्रति इकाई कर लगा देती है, यह संतुलन कीमत तथा मात्रा को किस प्रकार प्रभावित करेगा ?

हल : - संतुलित कीमत –

(अ) मांग वक्र ➢ $q_D = 1000 - P$

पूर्ति वक्र - $q_S = 700 + 2P$

चूँकि - $q_D = q_S$

1000-P = 700+2P

3P = 1000-700

P = $\frac{300}{3}$

P = 100

संतुलन मात्रा q_S = 700+2P

= 700+2*100

= 700+200 = 900

(ब) संतुलन कीमत ➢ $q_D = q_S$

1000-P = 400+2P

3P = 1000-400

P = $\frac{600}{3}$ = 200

P = 200 पर नये पूर्ति वक्र में संतुलन मात्रा

$q_S = 400 + 2P$

= 400+2*200

= 400+400

= 800

(स) मांग वक्र = $q_D = 1000 - P$

पूर्ति वक्र = $q_S = 700 + 2P$

$q_D = q_S$

1000-P = 700+2P

$$3P = 300$$

$$P = \frac{300}{3} = 100$$

यदि बिक्री कीमत पर प्रति इकाई 3 रूपये कर लगता है

तो संतुलन कीमत = 100+3 = 103 रु

संतुलन मात्रा q_S = 700+2P

= 700+2*103

= 700+206 = 906

प्र.(24) संतुलन कीमत तथा मात्रा किस प्रकार प्रभावित होती है -

जब उपभोक्ता की आय में (A) वृद्धि होती है (B) कमी होती है

उत्तर – (A) जब उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है –

जब बाजार में फर्मों की संख्या स्थिर रहती है तथा यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है तो बाजार मांग में वृद्धि हो जाती है जिससे मांग वक्र दाहिनी तरफ शिफ्ट हो जाता है जिससे संतुलन कीमत में तथा संतुलन मात्रा में वृद्धि होती है |

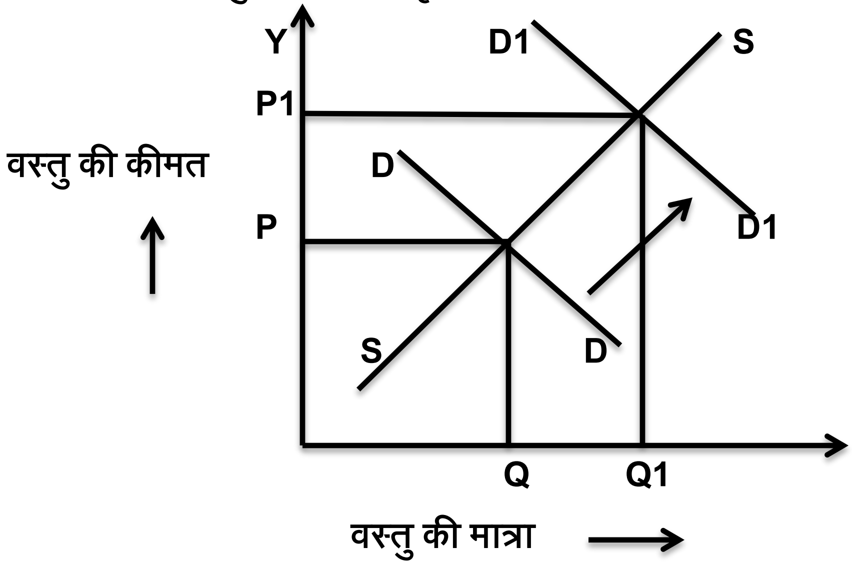

(B) जब उपभोक्ता की आय में कमी होती है –

जब बाजार में फर्मों की संख्या स्थिर रहती है एवं उपभोक्ता की आय में कमी होती है तो बाजार मांग में कमी आ जाती है जिससे मांग वक्र बायीं तरफ शिफ्ट हो जाता है | जिससे संतुलन कीमत एवं संतुलन मात्रा में कमी आती है |

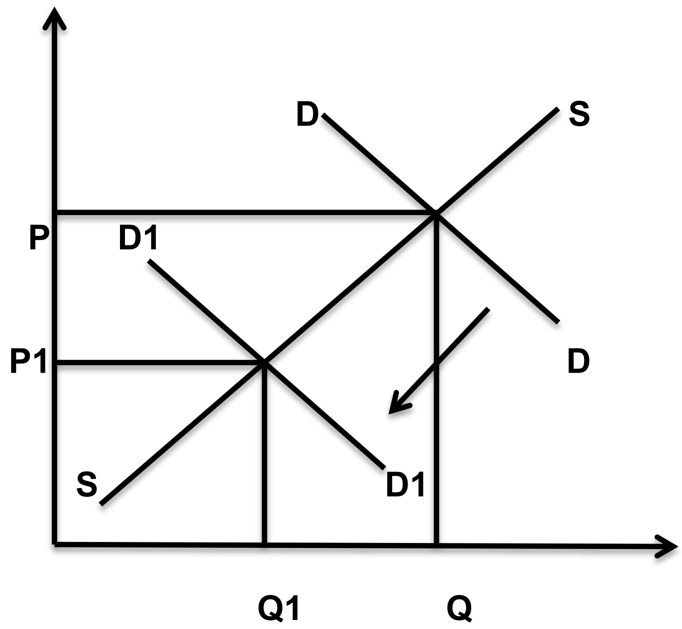

प्र.(25) पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में बाजार संतुलन का वैकल्पिक नाम क्या है ?
उत्तर – शुन्य अधिमांग - शुन्य अधिपूर्ति स्थिति |

प्र.(26) साम्य कीमत / संतुलन कीमत किसे कहते है
उत्तर - पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में वस्तु की वह कीमत जिस पर वस्तू की मांग मात्रा व वस्तु की पूर्ति मात्रा सामान हो , संतुलन कीमत कहलाती है |

प्र.(27) जब उत्पादन में प्रयुक्त आगतो की कीमतों में परिवर्तन होता है तो किसी वस्तु की संतुलन कीमत तथा मात्रा किस प्रकार परिवर्तित होती है ?
उत्तर – (a) उत्पादन की आगतों की कीमत में कमी होने पर उत्पादन लागत में भी कमी आएगी तथा फलस्वरुप पूर्ति बढ़ जाएगी जिससे पूर्ति वक्र दाहिनी तरफ शिफ्ट हो जायेगा एवं संतुलन कीमत में कमी होगी तथा संतुलन मात्रा में वृद्धि होगी |

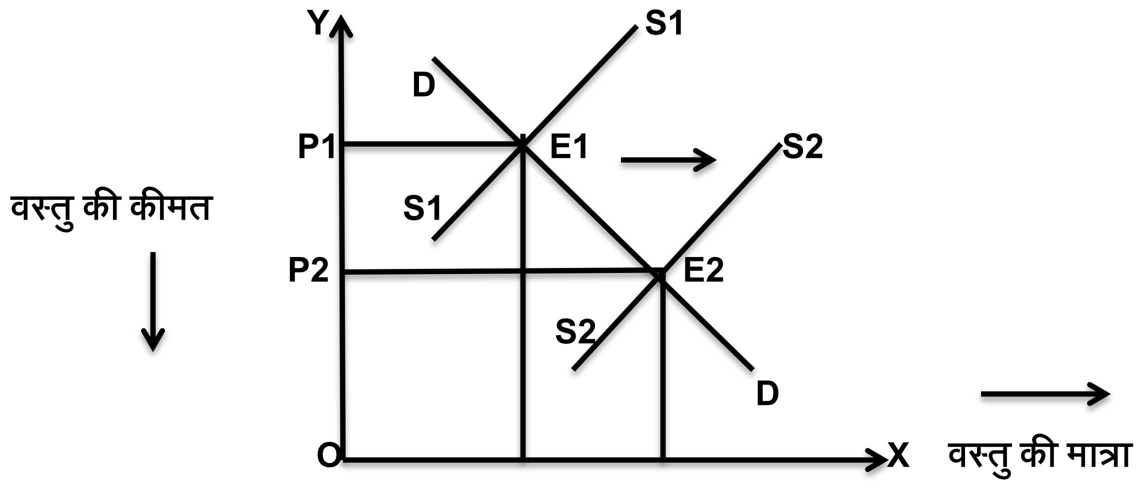

(b) आगतों में वृद्धि - जब आगतो की कीमत में वृद्धि होती है तो वस्तु की लागत में वृद्धि होती है जिससे पूर्ति मात्रा में कमी आएगी एवं पूर्ति वक्र बायीं और शिफ्ट हो जायेगा | परिणाम स्वरूप संतुलन कीमत में वृद्धि तथा संतुलन मात्रा में कमी होगी |

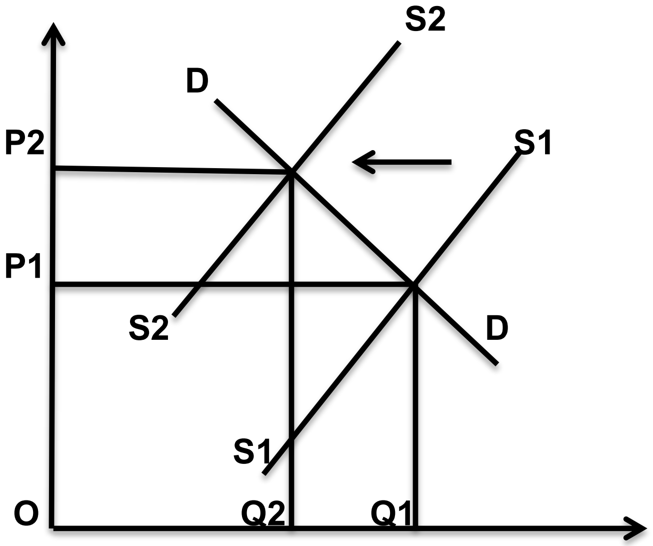

प्र.(28) पूरक वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन से संतुलन कीमत तथा संतुलन मात्रा पर प्रभाव को रेखा चित्र की सहायता से समझाइये –

उत्तर – पूरक वस्तुओं के उदहारण – चाय-चीनी, जूते-जुराब, पूरक वस्तुओं में एक वस्तु की मांग बढ़ने पर दूसरी वस्तु की भी मांग बढ़ जाएगी एवं एक वस्तु की मांग में कमी होगी |

पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि /कमी : -

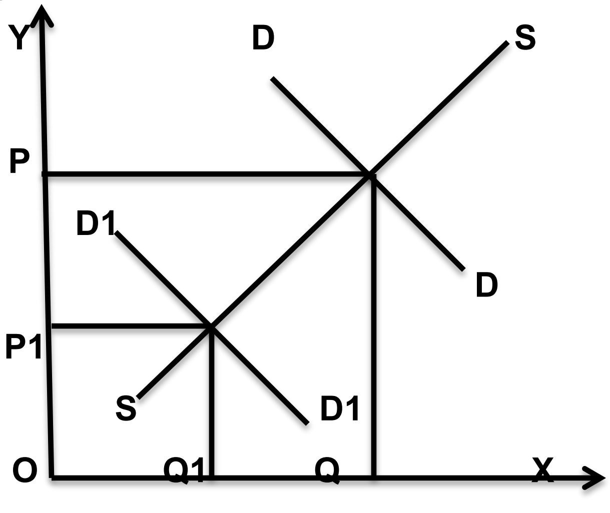

निष्कर्ष स्पष्ट है की एक वस्तु की कीमत बढ़ने से उस वस्तु की मनाग घट जाएगी साथ ही पूरक वस्तु की मांग भी घट जायगी |

निष्कर्ष स्पष्ट है की एक वस्तु की कीमत घटने से उस वस्तु की मांग मात्रा बढ़ जाएगी साथ ही पूरक वस्तु की मांग भी बढ़ जाएगी |

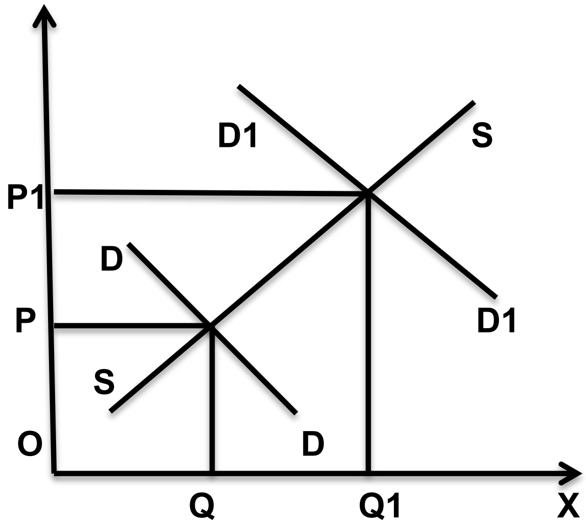

प्र.(29) यदि वस्तु (X) की स्थानापन्न वस्तु (Y) की कीमत में वृद्धि होती है , तो वस्तु (X) की संतुलन कीमत तथा मात्रा पर इसका प्रभाव होगा ?

उत्तर –

स्थानापन्न वस्तुऐ :- चाय – कॉफी,

X वस्तु = चाय   Y वस्तु = कॉफ़ी

यदि कॉफ़ी की कीमत में वृद्धि होती है तो कॉफ़ी की मांग कम हो जाएगी तथा स्थानापन्न वस्तु चाय की मांग में वृद्धि होगी | तथा संतुलन कीमत में वृद्धि होगी |

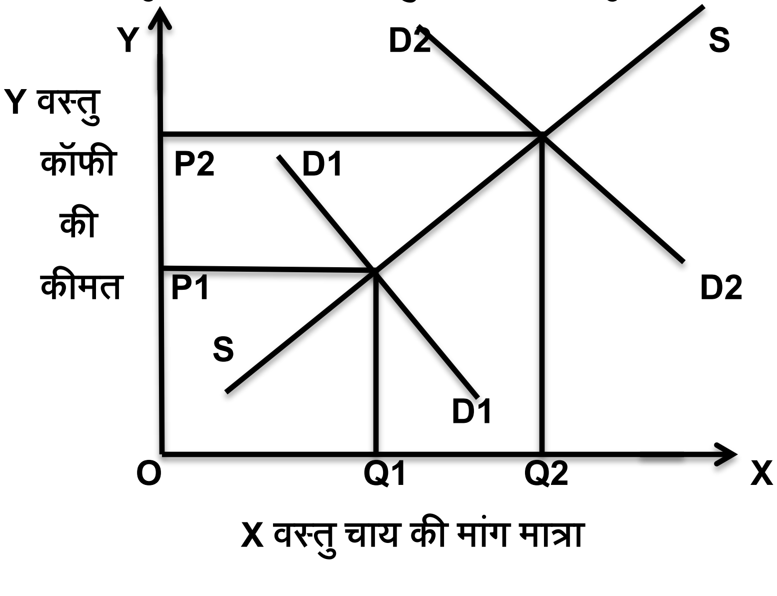

प्र.(30) नियंत्रण कीमत तथा संतुलन कीमत में अंतर लिखिए |

उत्तर : - नियंत्रण कीमत का निर्धारण सरकार द्वारा तय किया जाता है, जबकि बाजार (संतुलन) कीमत का निर्धारण बाजार में मांग एवं पूर्ति के साम्य द्वारा तय होता है |

प्र.(31) निम्नतम निर्धारित कीमत के सुपरिचित उदाहरण दीजिये –

उत्तर : - कृषि समर्थन मूल्य , न्यूनतम मजदूरी मूल्य |

प्रश्न बैंक

कक्षा 12 वी.

विषय – अर्थशास्त्र

इकाई – प्रतिस्पर्धारहित बाजार

विषय विशेयज्ञ – चन्दन सिंह देवडा प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

रा0उ0मा0वि0 आसावरा, वल्लभनगर

प्रश्न.1. एकाधिकार बाजार मे माँग वक्र होता है –

(अ) धानात्मक ढ़ाल वाला वक्र

(ब) ऋणात्मक ढाल वाला वक्र

(स) पूर्णतया लोचदार वक्र

(द) पूर्णतया बेलोचदार वक्र — सही उत्तर (ब)

प्रश्न.2. जहाँ पर कुल संप्राप्ति अधिकतम होती है, वहाँ पर सीमान्त संप्राप्ति होती है –

(अ) अधिकतम

(ब) शून्य

(स) धनात्मक

(द) ऋणात्मक — सही उत्तर (ब)

प्रश्न.3. एकाधिकार के अन्तर्गत AR तथा MR होते है–

(अ) $AR = MR$

(ब) $AR > MR$

(स) $AR < MR$

(द) $AR \geq MR$ — सही उत्तर (ब)

प्रश्न.4. एकाधिकार में विक्रेताओं की संख्या कितनी होती है ?

उत्तर : एक।

प्रश्न.5. अल्पाधिकार को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : जब सजातीय वस्तु के उत्पादक फर्म की संख्या अल्प हो तो यह अल्पाधिकार की स्थिति होगी।

प्रश्न.6. एकाधिकार के अन्तर्गत बाजार माँग वक्र किस वक्र के समान होता है ?

उत्तर : औसत संप्राप्ति वक्र के।

प्रश्न.7. जब कुल संप्राप्ति गिरती है तब सीमान्त संप्राप्ति कैसी होती है ?

उत्तर : ऋणात्मक

प्रश्न.8. औसत संप्राप्ति ज्ञात करने का सूत्र लिखिए।

उत्तर : औसत संप्राप्ति।

$$= \frac{\text{कुल संप्राप्ति}}{\text{बाजार में बेची जाने वाली मात्रा}}$$

प्रश्न.9. एकाधिकारी फर्म का मुख्य उद्देश्य क्या होता है ?

उत्तर : लाभ को अधिकतम करना।

प्रश्न.10. द्वि–अधिकार किसे कहते है ?

उत्तर : अल्पाधिकार की एक विशेष स्थिति सिसमें केवल दो विक्रेता होते हैं।

प्रश्न.11. किस प्रकार के बाजार में फर्म ही उद्योग होती है।

उत्तर : एकाधिकार बाजार में फर्म ही उद्योग होती है।

प्रश्न.22.सीमान्त सप्रतीत का सूत्र लिखिए।

उत्तर : सीमान्त संप्राप्ति $= \frac{\Delta TR}{\Delta Q}$

प्रश्न.13. एकाधिकार की भरिभाषा दीजिए।

उत्तर : एकाधिकार बाजार की वह दशा है जिसमें वस्त का एक ही विक्रेता अथवा उत्पादक होता है तथा बाजार में कोई निकट स्थानापन्न वस्तु नहीं पाई जाती है।

प्रश्न.14.अल्पाधिकार एवं एकाधिकार में कोई एक अन्तर बताइए।

उत्तर : अल्पाधिकार में बाजार में कुछ विक्रेता होते हैं जबकि एकाधिकार में बाजार में मात्र एक ही विक्रेता होता है।

प्रश्न.15.एकाधिकार बाजार की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

उत्तर : (1) वस्तु का एकमात्र विक्रेता अथवा उत्पादक ।

(2) बाजार में वस्तु का कोई निकट स्थानापन्न का अभाव पाया जाता है।

(3) इसमें फर्म की उद्योग होता है।

(4) कीमत विभेद पाया जाता है

(5) दीर्घकाल मे असामान्य लाभ प्राप्त होता है।

(6) एकाधिकारी का कीमत अथवा पूर्ति पर नियंत्रण होता है।

(7) अन्य फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध होता हैं।

प्रश्न.16.क्या एकाधिकार बाजार में माँग वक्र ही औसत संप्रप्ति वक्र होता हैं ?

उत्तर : एकाधिकार बाजार में माँग वक्र ही औसत संप्राप्ति वक्र होता है क्योंकि एकाधिकार में फर्म ही उद्योग होती है तथा एकाधिकार में औसत संप्राप्ति तथा कीमत दोनो एक ही मद होते हैं।

प्रश्न.17.कुल संप्राप्ति का क्या अभिप्राय हैं ?

उत्तर : फर्म द्वारा बाजार में वस्तु को बेचने से जो राशि प्राप्त होती हैं उसे कुल संप्राप्ति कहते हैं, इसे वस्तु की कीमत तथा विक्रय की गई मात्रा से गुणा करके ज्ञात की जा सकती है। अर्थात्

कुल संप्राप्ति = वस्तु की कीमत X विक्रय की गई मात्रा ।

प्रश्न.18.औसत संप्राप्ति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : एक फर्म द्वारा कुल संप्राप्ति में विक्रय की गई मात्रा का भाग देने से प्राप्त राशि को औसत संप्राप्ति कहते हैं, इसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता हैं –

$$\text{औसत संप्राप्ति} = \frac{\text{कुल संप्राप्ति}}{\text{विक्रय की गई मात्रा}}$$

प्रश्न.19.कुल संप्राप्ति तथा सीमान्त संप्राप्ति मे क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर : जब सीमान्त संप्राप्ति धनात्मक होती है तो कुल संप्राप्ति में वृद्धि होती हैं, सीमान्त संप्राप्ति के शून्य होने पर कुल संप्राप्ति अधिकतम होती" तथा सीमान्त संप्राप्ति के ऋणात्मक होने पर कुल संप्राप्ति में कमी होती है।

प्रश्न.19. एकाधिकार बाजार में माँग वक्र को रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : एकाधिकार बाजार मे माँग वक्र ऋणात्मक अथवा नीचे की ओर ढाल वाली रेखा होती है।

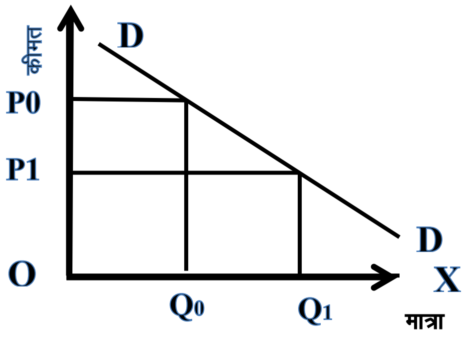

प्रश्न.20.अल्पाधिकार तथा एकाधिकार मे अन्तर बताइए।

उत्तर : अल्पाधिकार

1. अल्पाधिकार में कुछ विक्रेता होते हैं।
2. अल्पाधिकार मे नई फर्मों के प्रवेश मे कठिनाई आती हैं।
3. अल्पाधिकार मे फर्म का वस्तु की कीमतो पर पर्याप्त नियन्त्रण होता है।
4. अल्पाधिकार में वस्तु के विक्रय की लागत अधिक होती हैं।

एकाधिकार

1. एकाधिकार में बाजार में केवल एक ही विक्रेता होता है।
2. एकाधिकार मे नई फर्मों के प्रवेश पर प्रभावी रोक होती है।
3. एकाधिकार में फर्म का वस्तु की कीमत पर पूर्ण नियन्त्रण होता है।
4. एकाधिकार में वस्तु के विक्रय की लागत लगभग न के बराबर होती है।

प्रश्न.21.एकाधिकारी प्रतियोगिता और एकाधिकार मे औसत संप्राप्ति और सीमान्त संप्राप्ति व्रको को बताइये।

उत्तर :

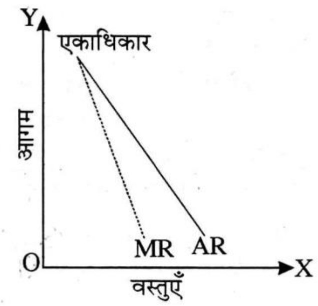

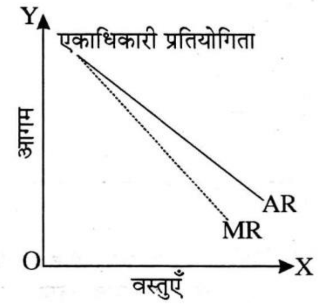

प्रश्न.23.निम्न तालिका को पूरा कीजिए –

बेची गई मात्रा	कुल संप्राप्ति	सीमान्त संप्राप्ति	औसत संप्राप्ति
1	10	10	–
2	–	–	9
3	24	–	–
4	–	–	7
5	30	–	6
6	30	0	–
7	28	–	4
8	–	–4	3

उत्तर

बेची गई मात्रा	कुल संप्राप्ति	सीमान्त संप्राप्ति	औसत संप्राप्ति
1	10	10	10
2	18	8	9
3	24	6	6
4	28	4	7
5	30	2	6
6	30	0	5
7	28	–2	4
8	24	–4	3

प्रश्न बैंक

कक्षा -12th　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　विषय -अर्थशास्त्र

पाठ -राष्ट्रीय आय का लेखांकन

प्रश्न निर्माणकर्ता: चन्दन सिंह देवड़ा (प्राध्यापक)

रा.उ.मा.वि.आसावरा (भींडर)

प्रश्न:1 राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है -

(a) मध्यवर्ती वस्तुओं को

(b) अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं को

(c) कच्चे माल को

(d) मशीनरी को　　　　　　　सही उत्तर - (b)

प्रश्न:2 राष्ट्रीय आय को मापने की विधि है -

(a) उत्पाद अथवा मूल्य वर्धित विधि

(b) व्यय विधि

(c) आय विधि

(d) उपरोक्त सभी　　　　　　सही उत्तर - (d)

प्रश्न:3 चक्रीय प्रवाह में शामिल है-

(a) वास्तविक प्रवाह

(b) मौद्रिक प्रवाह

(c) a एवं b दोनों

(d) इनमें से कोई नहीं　　　　सही उत्तर - (c)

प्रश्न:4 व्यय विधि से सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात करने का सूत्र लिखिए l

उत्तर : सकल घरेलू उत्पाद = C+I+G+X-M

प्रश्न:5 प्रवाह किसे कहते हैं ?

उत्तर : वे आर्थिक चर जिनका संबंध एक समय अवधि से होता है वह प्रवाह कहलाते हैं।

प्रश्न:6 भारत में राष्ट्रीय आय की गणना किस संस्था द्वारा की जाती हैं ?

उत्तर : भारत में राष्ट्रीय आय की गणना केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO) द्वारा की जाती है।

प्रश्न:7 मध्यवर्ती वस्तुओं की परिभाषा दीजिए ?

उत्तर : वे वस्तुएं जो अन्य वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाती है।

प्रश्न:8 ऐसी वस्तुओं को क्या कहते हैं जिसे पुनः उत्पादन प्रक्रम के किसी चरण से गुजरना नहीं पड़ता है?

उत्तर : अंतिम वस्तुएं l

प्रश्न:9 निवल अथवा शुद्ध निवेश ज्ञात करने का सूत्र लिखिए l

उत्तर : निवल अथवा शुद्ध निवेश = सकल निवेश - मूल्यहास

प्रश्न:10 हस्तांतरण आय से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : वह आय जो किसी सेवा या वस्तु के प्रदान किए बिना प्राप्त होती है, हस्तांतरण आय कहते हैं l

प्रश्न:11 माल सूची से क्या आशय हैं ?

उत्तर :   अबिक्रीत वस्तुएं ,प्रयोग न हो सका कच्चा माल तथा अर्ध निर्मित वस्तुएं जिन्हें कोई फर्म एक वर्ष से दूसरे वर्ष तक

रखती है उसे माल सूची कहते हैं l

प्रश्न:12 राष्ट्रीय आय किसे कहते हैं ?

उत्तर : किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं l

प्रश्न:13 राष्ट्रीय आय की गणना में केवल अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं को ही क्यों शामिल करते हैं ?

उत्तर : क्योंकि इससे दोहरी गणना की संभावना नहीं रहती है l

प्रश्न:14 व्यापार घाटा क्या है ?

उत्तर : यदि किसी देश में निर्यातो से अर्जित राजस्व की तुलना में आयातो पर व्यय अधिक होता है तो इसे व्यापार घाटा कहते हैं।

प्रश्न:15 राष्ट्रीय आय लेखांकन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : किसी भी अर्थव्यवस्था की समस्त आर्थिक क्रियाओं का सांख्यिकी वर्गीकरण करना तथा उन आंकड़ों का विश्लेषण करने की रूपरेखा तैयार करना राष्ट्रीय आय लेखांकन कहलाता है।

प्रश्न:16 बाजार कीमत और साधन लागत में क्या अंतर है।

उत्तर: बाजार कीमत में शुद्ध अप्रत्यक्ष कर शामिल होता है जबकि साधन लागत में अप्रत्यक्ष कर शामिल नहीं होता है।

प्रश्न:17 उत्पादन के चार कारक कौन-कौन से हैं और इनमें से प्रत्येक के पारिश्रमिक को क्या कहते हैं ?

उत्तर:

क्रम संख्या	उत्पादन के कारक	पारिश्रमिक
1	भूमि	लगान
2	श्रम	मजदूरी
3	पूंजी	ब्याज
4	उद्यमी	लाभ

प्रश्न:18 मूल्यहास से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : पूंजीगत वस्तुओं में होने वाली नियमित टूट-फूट एवं घिसावट के कारण उनके मूल्य में होने वाली कमी या हानि को मूल्यहास कहते हैं।

प्रश्न:19 स्टॉक व प्रवाह में अंतर बताइए।

स्टॉक	प्रवाह
स्टॉक एक निश्चित बिंदु पर आर्थिक चर की माप है ।	प्रवाह समय की एक निश्चितअवधि में आर्थिक चर की माप है।
स्टॉक स्थिर अवधारणा है।	प्रवाह गत्यात्मक अवधारणा है।
स्टॉक में समय अवधि नहीं होती है।	प्रवाह में समय की अवधि होती हैं।
स्टॉक प्रवाह को प्रभावित करता है।	प्रवाह स्टॉक को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनो प्रकार से प्रभावित करता है।

संपत्ति,श्रमबल,पूंजी,बैंक जमा,	आय, मुद्रा का व्यय, पूंजी निर्माण,
छत की टंकी में पानी आदि	पूंजी पर ब्याज,टंकी से पानी का
स्टॉक के उदाहरण है l	रिसाव आदि प्रवाह के उदाहरण हैl

प्रश्न:20 मध्यवर्ती वस्तुओं एवं अंतिम वस्तुओं में अंतर बताइए l

उत्तर:

मध्यवर्ती वस्तुएं	अंतिम वस्तुएं
इनका अन्य वस्तुओं के उत्पादन हेतु उपयोग किया जाता है।	इनका उपभोक्ता अंतिम रूप से उपयोग करते हैं l
इनकी मांग उत्पादकों द्वारा की जाती है।	इनकी मांग उपभोक्ताओं द्वारा की जाती है l
इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है l	इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है l
इन वस्तुओं में उपयोगिता का सृजन कर पुनः बेचा जाता है।	इन वस्तुओं का अंतिम रूप से उपयोग कर लिया जाता है।
उदाहरण --ब्रेड	उदाहरण -- ब्रेड बनाने हेतु गेहूं

प्रश्न:21 आय के वर्तुल अथवा चक्रीय प्रवाह को समझाइए

उत्तर : अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य आय अथवा वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को आय का वर्तुल अथवा चक्रीय प्रवाह कहा जाता है l दूसरे शब्दों में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन, आय एवं व्यय के प्रवाह को चक्रीय प्रवाह कहा जाता है l एक सरल अर्थव्यवस्था में प्रवाह दो क्षेत्र हैं : (a) परिवार क्षेत्र (b) फर्म क्षेत्र

इन्हें नीचे दिए हुए चित्र की सहायता से स्पष्ट कर सकते है-

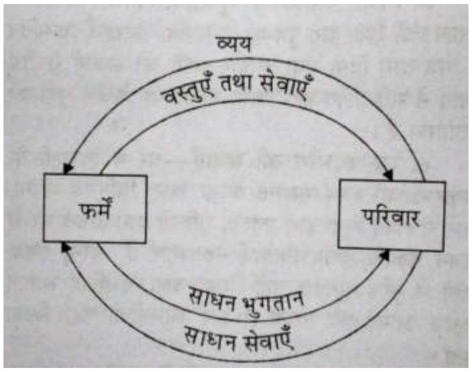

प्रश्न:22 सकल घरेलू उत्पाद की तीनों विधियों का आरेखीय चित्रण कीजिए I

उत्तरः

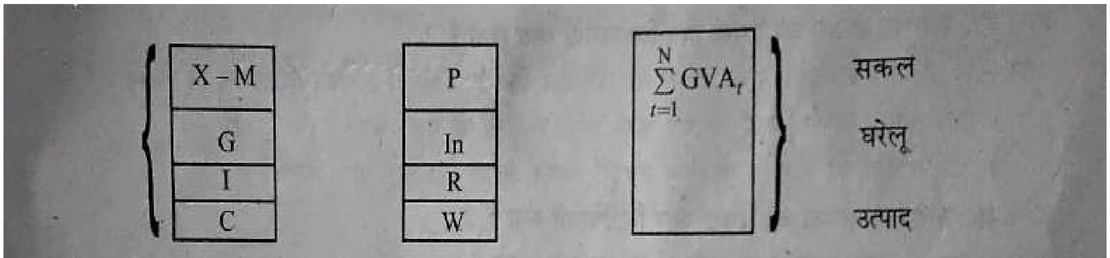

यहाँ X = निर्यात, M = आयात, G = अन्तिम सरकारी व्यय, I = अन्तिम निवेश व्यय, C = अन्तिम उपभोग व्यय, P = लाभ, In = ब्याज, R = लगान, W = मजदूरी, GVA_t = सभी फर्मों के सकल उत्पाद का मूल्यवर्धित योग है।

प्रश्न: 23 एक अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्न आंकड़े दिए गए हैं जिनके आधार पर बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद की गणना कीजिए--

मजदूरी	100 करोड़ रुपए
किराया	200 करोड़ रुपए
लाभांश	50 करोड़ रुपए
फर्म का अवितरित लाभ	70 करोड़ रुपए
ब्याज	50 करोड़ रुपए
निगम लाभ कर	30 करोड़ रुपए
मिश्रित आय	150 करोड़ रुपए
प्रत्यक्ष कर	65 करोड़ रुपए
आर्थिक सहायता	50 करोड़ रुपए
स्थाई पूंजी का उपयोग	10 करोड़ रुपए

उत्तर : उपरोक्त आंकड़ों से बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात करने हेतु आय विधि का उपयोग किया जाएगा जिसका सूत्र निम्न प्रकार से होता है -

$$GDP = W+P+In+R$$

अतः GDP = मजदूरी +किराया+ लाभांश +फर्म का अवितरित लाभ+ ब्याज +निगम लाभ कर +मिश्रित आय +प्रत्यक्ष कर -आर्थिक सहायता+ स्थाई पूंजी का उपयोग

= 100+200+50+70+50+30+150+65-50+10

= 675 करोड़ रुपए

प्रश्न:24 राष्ट्रीय आय मापन की आय विधि का वर्णन करिए l

उत्तर : आय विधि के अंतर्गत घरेलू आय की गणना उत्पादन के साधनों को उनके द्वारा प्रदान की गई उत्पादक सेवाओं के बदले साधन भुगतानो के आधार पर की जाती है l उत्पादन के चार साधन है -- 1.श्रम 2.भूमि 3. पूंजी 4. उद्यमी

इन उत्पादन के साधनों को उनकी सेवाओं के बदले में जो पारिश्रमिक दिया जाता है उसे साधन आय कहते हैंl साधन आय को चार भागों में बांटा जाता है -- 1. मजदूरी 2.लगान 3.ब्याज तथा 4.लाभ l अतः श्रम का पारिश्रमिक मजदूरी ,भूमि का पारिश्रमिक लगान, पूंजी का पारिश्रमिक ब्याज तथा उद्यमी का पारिश्रमिक लाभ कहलाता है l आय विधि में यह माना जाता है कि सभी फर्मों के द्वारा सम्मिलित रूप से अर्जित कुल आय का वितरण उत्पादन के साधनों के बीच मजदूरी, लाभ,ब्याज तथा लगान के रूप में होता है lअतः इस विधि में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी)को निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है--

GDP= W+P+In+R

यहां W = मजदूरी

P = लाभ

In= ब्याज

R = लगान

प्रश्न:25 निम्न को स्पष्ट करें l

(a) सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

(b) शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)

(c) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

(d) शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)

(a) सकल घरेलू उत्पाद(GDP) - किसी देश की घरेलू सीमा में 1 वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य जिसमें विदेशियों द्वारा हमारे देश में अर्जित की गई आय को जोड़ा जाता है तथा हमारे देशवासियों द्वारा विदेशों में अर्जित की गई आय को शामिल नहीं किया जाता है, वह सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है l

GDP = GNP - (निर्यात मूल्य - आयात मूल्य)

GDP = NDP + मूल्यहवास

(b) शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) -- बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद किसी राष्ट्र की घरेलू सीमा में 1 वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का बाजार मूल्य तथा मूल्यहवास के मध्य का अंतर है l

NDP = GDP - मूल्यहवास

(c) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) -- एक अर्थव्यवस्था के अंतर्गत 1 वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं सेवाओं का बाजार मूल्य तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय का योग ,सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहलाता है l

GNP = GDP+ विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय

(d) शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) -- किसी देश में 1 वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं के बाजार मूल्य के योग से मूल्य हास को घटाकर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात किया जाता हैl

NNP = GNP - मूल्यहवास

उच्च माध्यमिक परीक्षा 2021
प्रश्न बैंक विषय – अर्थशास्त्र
इकाई 6 – मुद्रा एवं बैंकिंग

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र न 1. वस्तु विनिमय प्रणाली का अर्थ लिखिए ।

उत्तर – वस्तु विनिमय प्रणाली से आशय अर्थव्यवस्था से है जिसमें वस्तुओं का वस्तुओं ही प्रत्यक्ष विनिमय होता है।

प्र न 2. मुद्रा को परिभाषित कीजिए ।

उत्तर – मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, स्थागित भुगतानों के आधार एवं मूल्य के संचय के साधन के रुप में विस्तृत रुप से स्वीकार की जाती है।

प्र न 3. मुद्रा के दो प्रमुख कार्यो को बताइए ।

उत्तर – 1. विनिमय का माध्यम 2. मूल्य का मापक ।

प्र न 4. वस्तु विनिमय की कोई कठिनाइयाँ लिखिए ।

उत्तर – 1. दोहरे संयोग का अभाव 2. वस्तु के मूल्य मापनें में कठिनाई।

प्र न 5. मुद्रा उपभोक्ता को निर्णय का अधिकार किस प्रकार देती है ?

उत्तर – मुद्रा एक वस्तु है जिसमे सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य आंका जाता है। इस कारण मुद्रा मनुश्य को आर्थिक निर्णय लेने में सहायता करती है, जैसे – वह कौन–सी वस्तु खरीदे, कौन–सी नहीं ।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्र न 1. मुद्रा मूल्य से आप क्या समझते है ?

उत्तर – अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा के मूल्य के अलग–अलग अर्थ लगाये है लेकिन सर्वाधिक प्रचलित अर्थ में मुद्रा के मूल्य का आशय उसकी क्रय शक्ति से लगाया जाता है। इसका आशय यह है कि मुद्रा की एक इकाई के बदले खरीदी जा सकने वाली वस्तुओ व सेवाओं की मात्रा ही उसका मूल्य होता है। उदाहरण के लिए एक किलो गेहूँ का मूल्य 20 रु. है तो इसका आशय यह भी हो सकता है कि 20 रु. में एक किलो गेहूँ मिलता है अर्थात् 20 रु. की क्रय भाक्ति एक किलो गेहूँ के बराबर है।

प्र न 2. वर्तमान युग में मुद्रा के महत्व को समझाइए।

उत्तर – वर्तमान युग मे आर्थिक क्रियाओं के प्रत्येक क्षेत्र में मुद्रा का महत्वपर्ण स्थान है। मुद्रा के बिना अर्थव्यवस्था के संचालन की आज के समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मार्शल ने ठीक ही कहा है कि '' मुद्रा वह धुरी है जिसके चारो ओर अर्थ विज्ञान चक्कर लगाता है। '' प्रो. हैरिस ने मुद्रा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''समस्त मानवीय वदैवीय वस्तुएँ, ख्याति और सम्मान मुद्रा के सामने सिर झुकाते है ।'' उपरोक्त विवेचन से स्पश्ट है कि वर्तमान में अत्यधिक महत्व है।

प्र न 3. मुद्रा का आकस्मिक कार्य कौन–कौन से है ?

उत्तर – 1. **सामाजिक आय का विवरण** – मुद्रा सामाजिक आय के न्यायपूर्ण वितरण के कार्य को सरल बनाती है। उत्पति के विभिन्न साधनों के सामूहिक प्रयासों से उत्पादन कार्य किया जाता है अतः उत्पादिक वस्तु से आय को इन साधनों में न्यायोचित ढंग से वितरित करना आवश्यक है। इनक कार्य को मुद्रा ने ही सम्भव बनाया है। **2. साख का आधार** – मुद्रा ने ही साख व्यवस्था को जन्म दिया है। बैकों द्वारा ऋण प्रदान करना मुद्रा द्वारा ही सम्भव हुआ है। **3. सम्पति की तरलता** – मुद्रा ने सम्पति को तरलता प्रदान की है। आज कोई भी व्यक्ति एक भाहर के मकान को बेचकर मुद्रा प्राप्त करके दूसरे शहर में दूसरा मकान खरीद सकता है।

CBEO BHINDER

प्र न 4. मुद्रा के दो सहायक कार्य लिखिए ।

उत्तर – **1. भावी भुगतान का आधार** – मुद्रा ने भावी भुगतानों को सम्भव बनाया है क्योकि मुद्रा के मूल्य में ज्यादा स्थिरता होती है। आजकल ज्यादातर लेने देने उधार होते है। इन उधार लेन–देनो का भुगतान भविश्य में किस प्रकार व कितना करना है, इसका निर्धारण मुद्रा द्वारा ही होता है।

2. मूल्य का संचय – मुद्रा ने भविश्य के लिए मूल्य को संचित करने रखना सम्भव बना दिया है। मनुष्य मुद्रा के रुप में बचत कर सकता है तथा अपनी बचतों पर ब्याज भी प्राप्त कर सकता है। वह अपनी बचतों के माध्यम से अपनी भविष्य की आवश्यकताओं को पुरा कर सकता है।

प्र न 5. वस्तु विनिमय प्रणाली के दोश अथवा कठिनाइयाँ को समझाइयें।

उत्तर – वस्तु विनिमय प्रणाली ने विकास की प्रारम्भिक अवस्था में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया तथा समाज को अनाश्यकता की विभिन्न वस्तुएँ प्राप्त करने को सरल बनाया लेकिन मानवीय आवश्यकताओं में तेजी से वृद्वि होने पर इस प्रणाली में अनेको कठिनाइयाँ हो गई । इस प्रणाली की प्रमुख कठिनाइयाँ निम्नलिखित है। –

1. **दोहरे संयोग का अभाव**
2. **मूल्य मापक की कठिनाई**
3. **विभाज्यता की समस्या**
4. **भावी भुगतान में कठिनाई**
5. **संचय में कइिनाई**
6. **मूल्य स्थानान्तरण में कठिनाई**

CBEO BHINDER

उच्च माध्यमिक परीक्षा 2021

प्रश्न बैंक विषय – अर्थशास्त्र

इकाई 6 – मुद्रा एवं बैंकिंग

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र न 1. व्यापारिक बैंक की परिभाषा लिखिए ।

उत्तर – व्यापारिक बैंक एक ऐसी वित्तीय संस्था है जो मुद्रा एवं साख का व्यवसाय करती है।

प्र न 2. व्यापारिक बैंक के कोई चार कार्य लिखिए ।

उत्तर – 1. जमाएँ स्वीकार करना 2. ऋण प्रदान करना
3. अभिकर्मा के कार्य करना 4. सामान्य उपयोगी कार्य करना ।

प्र न 3. अधिविकर्ष को समझरइए ।

उत्तर – जब बैंक चालू खाताधारक को एक सीमा तक खाते में जमा रकम से ज्यादा राशि निकालने की सुविधा प्रदान करती है तो ज्यादा निकाली गई राशि को ही अधिविकर्ष कहते है।

प्र न 4. इन्टरनेट बैंकिग क्या है ?

उत्तर – आजकल बैंक अपने ग्राहको इंटरनेट बैंकिग सुविधा प्रदान करते है। इसके अन्तर्गत ग्राहक घर बैठे आफनलाईन भुगतान कर सकता है। यह कार्य बैंक से प्राप्त ID तथा Password के माध्यम से होता ह।

प्र न 5. ATM का पूरा नाम लिखिए ।

उत्तर – Automated Teller Machine.

लघु उत्तरात्मक प्रश्न –

प्र न 1. मोबाईल बैंकिग क्या है ? समझाइए।

उत्तर – आजकल व्यापारिक बैंक अपने ग्राहको को स्मार्टफोन के माध्यम से मोबाइन एप द्वारा बैंकिग सुविधा प्रदान ग्राहक अपने बैंक से सम्बन्धित ऐप को प्ले स्टोर से अपने मोबाइल में डाउनलोड करके इस सुविधा का लााभ उठा सकते है इसके द्वारा बिना बैंक मोबाइल द्वारा ही ग्राहक सभी प्रकार के भुगतान कही भी कभी भी कर सकता है।

प्र न 2. वर्तमान में बैंको द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली कोई दो सेवाओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर – 1. **लॉकर सुविधा** – व्यापारिक बैंक अपने यहाँ ग्राहको से कुछ शुल्क लेकर उन्हे लॉकर की सुविधा प्रदान करते है। इन लॉकर में ग्राहको अपनी बहुमूल्य वस्तुएँ एवं कागजात रख सकते है।

2. **क्रेडिट कार्ड सुविधा** – बैंक अपने ग्राहको को क्रेडिट कार्ड देकर भी बैंकिग सुविधा प्रदान करते है। क्रेडिट कार्ड धारक एक सीमित राशि कार्ड से भुगतान कर सकता है। इसके माध्यम से कभी भी और कभी भी ऑनलाइन भुगतान हो सकता है।

प्र न 3. व्यापारिक बैंको द्वारा की जाने वाली साख सृजन की सीमाएँ लिखिए ।

उत्तर – 1. केन्द्रीय बैंक की नीति – साख सृजन केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति साख सृजन को प्रोत्साहित करती है।

2. बैंकिग विकास – जहाँ बैंकिग सुविधाएँ ज्यादा विकसित होती है वहाँ सृजन ज्यादा तथा कम विकसित होने पर कम होता है।

3. बैंकिग आदत – साख सृजन बैंकिग आदत से भी सीधा सम्बन्धित है। जहाँ बैंकिग सेवाओं का ज्यादा प्रयोग किया जाता है वहाँ साख सृजन ज्यादा होता है। इसके वितरीत कम साख का निर्माण होता है।

CBEO BHINDER

4. व्यावसयिक एवं ओ़द्योगिक विकास – औद्योगिक एवं व्यापारिक विकास का स्तर जिन देशों में ऊँचा होता है वहाँ साख सृजन ज्यादा होता है। इसके वितरीत कम साख का निर्माण होता है।

CBEO BHINDER

उच्च माध्यमिक परीक्षा 2021

प्रश्न बैंक विषय – अर्थशास्त्र

इकाई 6 – मुद्रा एवं बैंकिंग

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र न 1. केन्द्रीय बैंक की परिभाषा लिखिए ।

उत्तर – केन्द्रीय बैंक देश का शीर्षस्थ बैंक होता है जो मुद्रा निर्गमन एवं साख नियन्त्रण का कार्य करता है।

प्र न 2. बैंक दर से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर – बैक दर वह ब्याज दर होती है जिस पर केन्द्रीय बैंक अपने व्यापारिक बैंको को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराता है।

प्र न 3. साख की राशनिंग से आप क्या समझते है ?

उत्तर – साख की राशनिंग का आशय केद्रीय बैंक द्वारा भिन्न भिन्न क्षेत्रों के लिए साख की अधिकतम सीमा के निर्धारण से है।

प्र न 4. भारत के केन्द्रीय बैंक के नाम लिखिए ।

उत्तर – भारत के केन्द्रीय का नाम भारतीय रिजर्व बैंक है।

प्र न 5. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी मासिंक बुलेटिन का नाम लिखिए ।

उत्तर – आर. बी. आई. बुलेटिन

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्र न – 1. केन्दीय बैंक के नोट निर्गमन के कार्य को समझाइए।

उत्तर – केन्द्रीय बैंकों के नोट निर्गमन का एकाधिकार होंता है। जिससे नोटों में एकरुपता रहे तथा विनिमय कार्य में आसानी रहे इन बैंको के द्वारा विभिन्न मूल्यों के नोटों का निर्गमन किया जाता है। नोट निर्गमन करते समय केन्द्रीय बैंक को यह घ्यान रखना होता है कि नोटों का निर्गमन देश की आव यकता के अनुरुप ही हो न कम न ज्यादा । मुद्रा के ज्यादा निर्गमन करने से मुद्रा स्फीति का भय रहता है तथा कम निर्गमन होने पर व्यापारिक क्रियाएँ बाधित होती है।

प्र न 2. केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण के लिए अपनाये जाने वाले परिमाणात्मक उपाय लिखिए ।

उत्तर – 1. बैक दर में परिवर्तन　　2. खुले बाजार की क्रियाएँ
3. नकद कोषानुपात में परिवर्तन　　4. तरल कोषानुपात में परिवर्तन

प्र न 3. केन्द्रीय बैंक द्वारा की जाने वाली प्रत्यक्ष कार्यवाही को समझाइए।

उत्तर – जब केन्द्रिय बैक के आदेशों का कोई बैंक पालन नहीं करता है तभी यह अपनाया जात हे। इसके अन्तर्गत बैंक ऐसे बैंक को ऋण देने पर रोक लगा सकती है तथा उसके बिलो की पुनर्कटौती न करते है यह उन पर ऊँची ब्याज दर वसूल करता है। ऐसा करने से बैंक मजबूर होकर केन्द्रीय बैंक के आदेशो का पालन करने लगता है।

प्र न 4. भारतीय रिजर्व बैंक के केन्द्रिय निदेशक मण्डल को फ्लो चार्ट से समझाइए ।

उत्तर – भारतीय रिजर्व बैंक का केन्द्रिय निदेशक मण्डल ⟹ गवर्नर (1) ⟹ उप गवर्नर (4)
⟹ निदेशक (4) (चार स्थानीय मण्डलों से) ⟹ सरकारी अधिकारी (1)

इस प्रकार केन्द्रीय निदेशक मण्डल में गर्वनर सहित 20 सदस्य होते है।

प्र न 5. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्रकाशित कोई चार वार्षिक प्रकाशनों के नाम लिखिए ।

CBEO BHINDER

उत्तर – 1. मुद्रा एवं बैंकिग संख्याकी पर मेन्युअल
2. भारत में बैंकिग की प्रवृति और रिपोर्ट
3. भारत में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक की आधारभूत सांख्यिकीय विवरणियाँ
4. मुद्रा और वित्त सम्बन्धी रिपार्ट

प्र ान 6. केन्द्रीय बैंक के प्रमुख कार्य लिखिए ।

उत्तर – 1. मुद्रा का निर्गमन
2. बैकों का बैंक
3. सरकार का बैंकर
4. अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय कोषों का संरक्षक
5. केन्द्रीय समाशोधन गृह
6. साख का नियमन एवं नियन्त्रण

प्र न 7. केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण के लिए अपनाये जाने वाले उपायों को फ्लो चार्ट से समझाइए।

उत्तर – 1. परिणात्मक विधियाँ
2. गुणात्मक विधियाँ

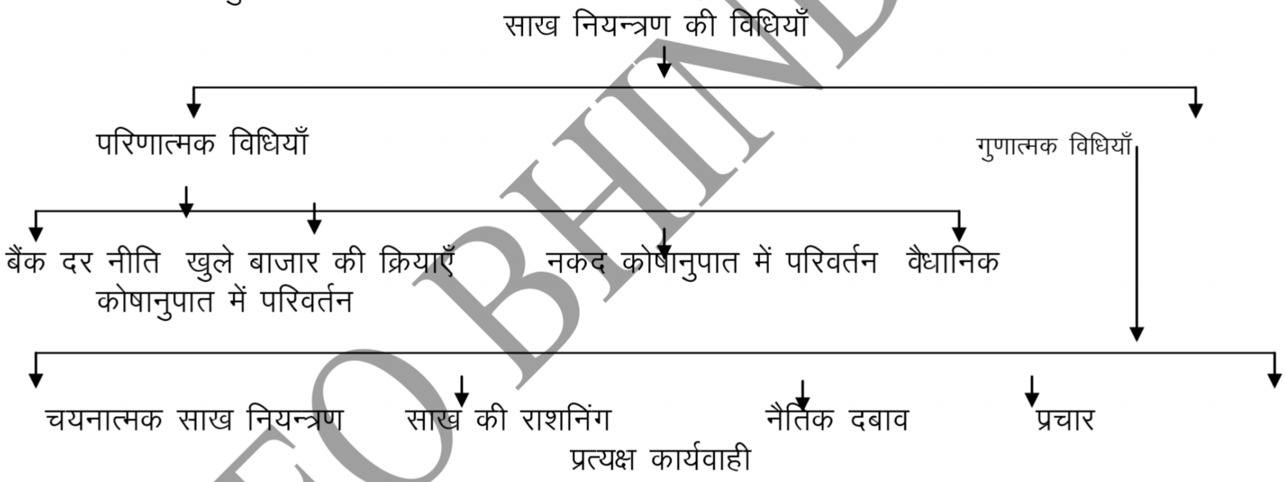

CBEO BHINDER

UNIT-IV

आय एवं रोजगार का निर्धारण

प्र.1 आय का अर्थ बताइये ?

उत्तर :– व्यक्ति को कार्य करने के बदले मे जो धनराशि प्राप्त होती है, उसे आय कहते है।

प्र. 2 रोजगार का अर्थ लिखिए।

उत्तर :– रोजगार से तात्पर्य ऐसी स्थिति से होता है जिसमें प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के इच्छूक एवं योग्य व्यक्ति को कार्य मिल जाता है।

प्र. 3 आय एवं रोजगार का सिद्धांत किसने दिया ?

उत्तर :– आय एवं रोजगार सिद्धांत का प्रतिपादन जॉन मेनार्ड किन्स द्वारा किया गया ।

प्र. 4 उपभोग फलन को समझाइये।

उत्तर :– यह आय तथा उपभोग के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है। इसके अनुसार आय में वृद्धि होने पर उपभोग में भी वृत्रिृ होती है लेकिन जितनी वृद्धि आय में होती है उस अनुपात में उपभोग में नहीं होती है। अतः बढ़ी हुई आय का कुछ भाग उपभोग बढ़ाने में तथा कुछ भाग बचत बढ़ाने में होता है।

सूत्र =

$$C = F(yd)$$

C = उपभोग

F = फलन

Yd = प्रत्योज्य आय

ठसको उपभोग के सम्बन्ध में कीन्स का मनौवेज्ञानिक नियम कहते है।

प्र. 5 उपभोग की औसत प्रवृत्ति क्या है ?

उत्तर :– कूल उपभोग में कुल आय का भाग देने पर उपभोग की औसत प्रवृत्ति प्राप्त होती है।

$APC = \frac{C}{4}$ कूल उपभोग / कूल आय

प्र. 6 उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति क्या है ?

उत्तर :– उपभोग में परिवर्तन का आय में परिवर्तन से भाग देने पर उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति होती है।

$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$ उपभोग में परिवर्तन / आय में परिवर्तन

प्र. 7 बचत का अर्थ बताइये।

उत्तर :– कुल आय में से उपभोग व्ययों को घटाने पर जो राशि शेष बचती है उसे बचत कहते है।

प्र. 8 बचत फलन से क्या तात्पर्य है।

उत्तर :– यह आय तथा बचत के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है।

प्र. 9 बचत की औसत प्रवृत्ति क्या है।

उत्तर :– कुल बचत में कुल आय का भाग देने पर बचत को औसत प्रवृत्ति प्राप्त होगी।

सूत्र = $APS = \frac{S}{Y}$ कूल बचत / कूल आय

प्र. 10 बचत की सीमांत प्रवृत्ति को समझाइये।

उत्तर :– बचत में परिवर्तन का आय में परिवर्तन से भाग देने पर बचत की सीमांत प्रवृत्ति प्राप्त होती है।

MPS = $\frac{\Delta 3}{\Delta 4}$ बचत में परिवर्तन / आय में परिवर्तन

प्र. 11 निवेश फलन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– यह निवेश तथा आय के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है।

प्र. 12 निवेश के प्रकार बताइयें

उत्तर :– निवेश को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा गया है।

i. सार्वजनिक निवेश :– सरकार द्वारा किया जाने वाला निवेश सार्वजनिक निवेश कहलाता है। जैसे :– बांध,पूल,सड़क आदि।
ii. निजी निवेश :– किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा किया गया निवेश निजी निवेश कहलाता है। जैसे – उद्योग,भवन ,मशीनरी,उपकरण आदि।
iii. स्वायत निवेश :– जब निवेश आय ,लाभ अथवा ब्याज दर पर निर्भर नहीं करता है तो उसे स्वायत निवेश कहते है। जैसे – बांध,पूल,सड़क,शिक्षा,चिकित्सा आदि।

प्र. 13 प्रत्याशित बचत से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– भविष्य में की जाने वाली बचत की राशि का निर्धारण करना प्रत्याशित बचत कहलाती है।

प्र. 14 प्रत्याशित निवेश से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– भविष्य में की जाने वाली निवेश की राशि का निर्धारण करना प्रत्याशित निवेश कहलाता है।

प्र. 15 सम्पादित बचत या वास्तविक बचत से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– पारिवारिक क्षेत्र द्वारा वास्तव में बचत को गयी राशि से वास्तविक बचत कहते है।

प्र. 16 सम्पादित निवेश या वास्तविक निवेश से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– उद्योगों द्वारा वास्तव मे किया गया निवेश वास्तविक निवेश कहलाता है।

प्र. 17 पूंजी की सीमांत कार्य कुशलता से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– नये निवेशों पर लाभ की प्रत्याशा को पूंजी की सीमांत कार्यकुशलता कहते है।

प्र. 18 सम विच्छेद बिन्दू से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– जिस बिन्दू पर उपभोग व्यय कुल आय के बराबर होते है,उसे समविच्छेद बिन्दू कहते है। संक्षिप्त में इस बिन्दू पर बचत नहीं होती है।

प्र. 19 समग्र मांग से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– एक वर्ष में एक देश में वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग कहते है।

प्र. 20 समग्र पूर्ति से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– एक वर्ष में एक देश में वस्तुओं तथा सेवाओं की पूर्ति को समग्र पूर्ति कहते है।

AS = C + 3 समग्र पूर्ति = उपभोग + बचत

प्र. 21 आय एवं रोजगार का साम्य स्तर से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति जिस स्तर पर बराबर होते है उसे आय एवं रोजगार का साम्य स्तर कहते है।

प्र. 22 रोजगार गुणक का प्रतिपादन किसके द्वारा व कब किया गया ?

उत्तर :– रोजगार गुणक का प्रतिपादन RF Kahm द्वारा सन् 1931 में किया गया ।

प्र. 23 निवेश गुणक का प्रतिपादन कब व किसके द्वारा किया गया ?

उत्तर :–निवेश गुणक का प्रतिपादन जॉन मेनार्ड किन्स द्वारा सन् 1930 में किया गया ।

प्र. 24 निवेश गुणक का अर्थ बताइये।

उत्तर :– आय में परिवर्तन का निवेश में परिवर्तन से भाग देने पर निवेश गुणक प्राप्त होता है।
सूत्र =

निवेश गुणक =आय में परिवर्तन / निवेश में परिवर्तन

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

प्र. 25 निवेश गुणक का आकार या मूल्य समझाइये।

उत्तर :– निवेश गुणक का आकार या मूल्य उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। यदि MPC का आकार या मूल्य भी अधिक होगा इसके विपरीत MPC का आकार या मूल्य कम होगा तो गुणक का आकार व MPC मूल्य भी कम होगा।

प्र. 26 गुणक का सूत्र लिखिये।

उत्तर :– $K = \frac{1}{1-MPC}$ या $\frac{1}{MPC}$

प्र. 27 गुणक की अग्रिम प्रक्रिया से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– जब निवेश बढ़ता है तो वह आय के स्तर को भी बढ़ाएगा यह गुणक की अग्रिम प्रक्रिया कहलाती है।

प्र. 28 गुणक पश्चगामी प्रक्रिया को समझाइये।

उत्तर :– जब निवेश घटता है तो वह आय के स्तर को भी घटायेगा यह गुणक की पश्चगामी प्रक्रिया कहलाती है।

प्र. 29 न्यून मांग से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– जब समग्र मांग समग्र पूर्ति से कम होती है तो उसे न्यून मांग कहते है।

प्र. 30 आधिक्य मांग से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– जब समग्र मांग समग्र पूर्ति से अधिक होती है तो उसे आधिक्य मांग कहते है।

प्र. 31 मंदी से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– जब आर्थिक क्रियाओं जैसे वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन,कीमत,आय,रोजगार तथा मांग में पर्याप्त मात्रा में कमी आती है तो ऐसी स्थिति को मंदी कहते है। न्यून मांग मंदी की स्थिति को दर्शाती है।

प्र. 32 तेजी / मुद्रास्फीति / समृद्धि को समझाइये।

उत्तर :– जब आर्थिक क्रियाओं जैसे वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन,किमत,आय,रोजगार तथा मांग में पर्याप्त वृद्धि होती है तो इस स्थिति को तेजी कहते है।आधिक्य मांग की स्थिति तेजी को दर्शाती है।

प्र. 33 न्यून मांग अथवा मन्दी की स्थिति को ठीक करने के उपाय बताइय।

उत्तर :– 1. राजकोषीय उपाय
2. करों में कमी करना
3. सार्वजनिक ऋणों को कम करना
4. सार्वजनिक व्ययों में वृद्धि करना
5. घाटे का बजट बनाना
6. मौद्रिक उपाय
7. CRR,SLR तथा बैंक दर को कम करना
8. प्रतिभूतियों को क्रय करना
9. केन्द्रीय बैंक द्वारा सस्ती मौद्रिक एवं साख मिति का निर्माण करना

प्र. 34 विस्ताकर नीति से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– न्यून मांग अथवा मंदी की स्थिति में सरकार विस्तारक मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति अपनाती है।

प्र. 35 संकुचित नीति क्या है ?

उत्तर :–आधिक्य मांग या तेजी की स्थिति में सरकार संकुचित मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति अपनाती है।

प्र. 36 राजकोषीय नीति से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :– सार्वजनिक आय सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋणों से सम्बन्धित नीति को राजकोषीय नीति कहते है।

प्र. 37 विभिन्न उदाहरण

उत्तर :– गुणक का सूत्र बताइये

1. $K = \frac{1}{1-MPC}$ या $\frac{1}{MPC}$

2. यदि MPC का मान 0 है तो गुणक का मान बताइये।

उत्तर :– MPC = 0

$$K = \frac{1}{1-MPC} = \frac{1}{1-0} = \frac{1}{1} = 1$$

3. यदि MPC का मान 0.90 है तो गुणक का मान बताइये।

उत्तर :– MPC = 0

$$K = \frac{1}{1-0.90} = \frac{1}{0.10} = \frac{100}{10} = 10$$

4. यदि MPS का मान 0.80 है तो गुणक का मान बताइये।

उत्तर :– MPS = 0.80

$$K = \frac{1}{MPS} = \frac{100}{0.80} = 1.25$$

5. यदि MPS का मान 0.50 है तो गुणक का मान बताइये।

उत्तर :– MPS = 0.50

$$K = \frac{100}{0.50} = 2$$

6. यदि MPC का मूल्य कितना हो सकता है ।

उत्तर :– 0 से 1 के मध्य में ।

7. गुणक का मूल्य कितना हो सकता है।

उत्तर :– 1 से अनन्त के बीच।

8. यदि MPC का मान 0.60 है तो MPS का मूल्य कितना होगा ?

उत्तर :– 0.40

9. यदि APC = APS है तो दोनो का अलग–अलग मूल्य कितना होगा।

उत्तर :– 0.50

10. MPC का अधिकतम मूल्य

उत्तर :– 1

11. MPC व MPS की जोड़ कितने के बराबर होती है ?

उत्तर :– 1

12. MPC = 0.50 है तो MPS का मान बताइए ?

उत्तर :– 0.50

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर राजस्थान
कक्षा 12
संशोधित पाठ्यक्रम पर प्रश्न बैंक।
सत्र –2020–21
विषय अर्थशास्त्र
अध्याय – सरकारी बजट

विषय विशेषज्ञ – प्रहलाद सिंह बारहठ
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वल्लभनगर

अति लघुत्रातमक प्रश्न :–

प्रश्न 1 बजट का अर्थ बताइए।

उत्तर बजट का तात्पर्य सरकार के उस विवरण पत्र से होता है जिसमें वर्ष पर्यंत होने वाले आय–व्यय का ब्यौरा दर्शाया जाता है।

प्रश्न 2 बजट शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से मानी जाती है

उत्तर बजट शब्द की उत्पत्ति फ्रांसीसी भाषा के शब्द ''बोजेटे'' (Bougette) से मानी जाती है।

प्रश्न 3. ''बोजेटे'' (Bougette) शब्द का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर ''बोजेटे'' (Bougette) शब्द का शाब्दिक अर्थ है ''चमड़े का थैला''।

प्रश्न 4. इंग्लैंड में बजट शब्द का प्रयोग कब से शुरू हुआ।

उत्तर इंग्लैंड में बजट शब्द का प्रयोग 1733 ई. में हुआ।

प्रश्न 5. प्रोफेसर बेस्ट बैल द्वारा दी गई बजट की परिभाषा लिखिए।

उत्तर ''एक दिए गए समय के लिए वित्तीय प्रबंध जिसके साथ विधानसभा में स्वीकृति के लिए पेश करने का सामान्य सुझाव जुड़ा हुआ है।''

प्रश्न 6 बजट के प्रमुख दो भाग कौन से होते हैं?

उत्तर पहले भाग में प्रत्याशित आय व दूसरे भाग में प्रत्याशी व्यय।

प्रश्न 7 बजट को पारित करवाने के लिए किसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता है?

उत्तर बजट को पारित करवाने के लिए संसद के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 8 बजट का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

उत्तर बजट का मुख्य उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था की दशा व दिशा तय करना होता है।

प्रश्न 9 भारत में वित्तीय वर्ष की अवधि लिखिए?

उत्तर भारत में वित्तीय वर्ष की अवधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होती है।

प्रश्न 10. सरकारी बजट को आय व व्यय की प्रवृत्ति के आधार पर किस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है ?

उत्तर आय व व्यय की प्रवृत्ति के आधार पर बजट को निम्न दो भागों में बांटा जा सकता है राजस्व बजट व पूंजीगत बजट।

प्रश्न 11 राजस्व बजट सामान्य बजट के किस भाग में दर्शाया जाता है ?

उत्तर राजस्व बजट सामान्य बजट के प्रथम भाग में दर्शाया जाता है।

प्रश्न 12 पूंजीगत बजट सामान्य बजट के किस भाग में दर्शाया जाता है ?

उत्तर पूंजीगत बजट सामान्य बजट के दूसरे भाग में दर्शाया जाता है ।

प्रश्न 13 राजस्व बजट को पुनः कितने भागों में बांटा जाता है ?

उत्तर राजस्व बजट को दो भागों में बांटा जाता है– राजस्व प्राप्तियां व राजस्व व्यय।

प्रश्न 14 क्या पूंजीगत बजट को भी राजस्व बजट की तरह पूंजीगत प्राप्तियां व पूंजीगत व्यय में बांटा जाता है ?

उत्तर हां, पूंजीगत बजट को भी राजस्व बजट की तरह पूंजीगत प्राप्तियां व पूंजीगत व्यय में बांटा जाता है

प्रश्न 15 बचत का बजट किसे कहते हैं?

उत्तर वह बजट जिसमें सरकार के व्यय की अपेक्षा आय अधिक हो बचत का बजट कहलाता है।

कुल आय > कुल व्यय

प्रश्न 16 संतुलित बजट में क्या होता है?

उत्तर जिस बजट में सरकारी आय व सरकारी व्यय दोनों समान हो तो वह संतुलित बजट कहलाता है।

कुल आय = कुल व्यय

प्रश्न 17 घाटे के बजट को समझाइए।

उत्तर सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट में सरकारी व्यय की अपेक्षा सरकारी आय कम हो तो उसे घाटे का बजट कहां जाता है।

कुल आय < कुल व्यय

प्रश्न 18 केंद्र सरकार द्वारा दी गई उधार राशि (ऋणों) को वसूलना किस प्राप्ति (आय) का हिस्सा है?

उत्तर केंद्र सरकार द्वारा ऋणों की उगाही पूंजीगत प्राप्ति है।

प्रश्न 19 केंद्र सरकार द्वारा ऋण पर ब्याज प्राप्त करना कौन सी प्राप्ति (आय) हैं?

उत्तर केंद्र सरकार द्वारा ऋण पर ब्याज लेना राजस्व प्राप्ति है।

प्रश्न 20 राजस्व घाटा कब होता है?

उत्तर जब बजट की कुल राजस्व प्राप्तियां कुल राजस्व व्यय से कम हो तब राजस्व घाटा होता है इस घाटे में केवल राजस्व प्राप्तियां एवं राजस्व व्यय को ही शामिल किया जाता है।

राजस्व आय < राजस्व व्यय

लघुतरात्मक प्रश्न :–

प्रश्न 21 राजस्व आय (प्राप्तियों) के स्रोतों का नाम लिखिए।

उत्तर राजस्व आय के प्रमुख स्रोत हैं :–

1 कर राजस्व – जिसमें आयकर, अप्रत्यक्ष कर निगम कर, संपत्ति कर, उपहार कर शाष्ति कर, उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क आदि।

2 गैर कर राजस्व – ऋण, ब्याज, शुल्क, जुर्माना, उपहार आदि।

प्रश्न 22 राजस्व व्यय की प्रमुख मदों के नाम लिखिए।

उत्तर राजस्व व्यय को भी दो मदों में दर्शाया जाता है :–

1. आयोजना भिन्न व्यय (गैर योजनागत व्यय) जैसे– सरकारी कर्मचारियों को वेतन, सरकारी सहायता, अनुदान, ब्याज की अदायगी आदि।

   इन्हें गैर योजनागत व्यय या आयोजना भिन्न व्यय इसलिए कहते हैं कि इन से किसी योजना का निर्माण नहीं होता वरन जो योजनाएं पूर्ण हो गई हैं उनके परिचालन करने का व्यय होता है इससे किसी प्रकार का नया विकासात्मक कार्य नहीं होता है।

2 आयोजना व्यय या विकासात्मक व्यय जैसे– सड़कें, बांध, रेलवे लाइन, खाद के कारखाने एवं आधारिक संरचना से जुड़े हुए समस्त कार्यों पर व्यय तथा राज्यों को अनुदान।

इस व्यय से नयी योजनाओं का निर्माण होता है एवं देश में परिसंपत्तियां बढ़ती है जिससे देश का विकास होता है। एवं सामान्य जनता का जीवन स्तर ऊपर उठता है।

प्रश्न 23. पूंजीगत प्राप्तियों के स्त्रौतों के नाम लिखिये।

उत्तर इसके अंतर्गत आय के उन समस्त स्त्रौतों को रखा जाता है जिनसे सरकारी देनदारियां उत्पन्न होती है या सरकारी परिसंपत्तियों में कमी आती है जैसे ऋणों की वसूली ,उधार, छोटी बचते, किसान विकास पत्र विनिवेश आदि।

प्रश्न 24 पूंजीगत व्यय की प्रमुख मदों को समझाइए।

उत्तर पूंजीगत व्यय को भी दो भागों में बांटा जाता है

1 आयोजना भिन्न व्यय (गैर योजनागत व्यय) जैसे– ऋण भुगतान।

2 आयोजना व्यय– राज्य सरकारों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को ऋण, सरकारी क्षेत्र के उपक्रम लगाना ,आधारिक संरचना पर व्यय, मशीनरी पर व्यय, भूमि अवाप्ति पर व्यय,सड़क ,पुल ,बांध निर्माण, हथियार व उपकरण खरीदना, सेना का आधुनिकीकरण करना।

प्रश्न 25 पूरक बजट से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर किसी योजना पर बजट में आवंटित राशि अगर 31 मार्च से पूर्व ही समाप्त हो जाए तो इस स्थिति में सरकार संसद के सम्मुख पूरक बजट प्रस्तुत करती है और व्यय के लिए अतिरिक्त राशि की मांग की जाती हे इसे ही पूरक बजट कहा जाता है।

प्रश्न 26 लेखानुदान (vote on account) को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर पिछले वर्ष का बजट 31 मार्च को समाप्त हो जाता है और नया बजट सत्र 1 अप्रैल से शुरू होता है। लेकिन बजट पारित करने की प्रक्रिया में समय लगता है। इसलिए सरकार को 1 अप्रैल से खर्चों के लिए संसद अस्थाई रूप से सरकार को व्यय के लिए अग्रिम धनराशि देती है। इस प्रक्रिया को लेखानुदान कहते हैं।

प्रश्न 27 निष्पादन बजट का अर्थ बताइए।

उत्तर कार्य के परिणामों या निष्पादन को आधार बनाकर निर्मित किया गया बजट निष्पादन बजट कहलाता है। यह बजट मुलत लक्ष्योन्मुखी एवं उद्देश्य परक प्रणाली पर आधारित होता है। इस बजट में जिस लक्ष्य एवं उद्देश्य के लिए राशि आवंटित की जाती है यदि उसके परिणाम संतोषजनक रहते हैं तो इस परियोजना या कार्य हेतु और राशि को

स्वीकृति दी जाती है। भारत में यह बजट कुछ विभागों में 1968 से शुरू किया गया था। इसकी शुरुआत सर्वप्रथम 1950 में अमेरिका में हुई थी।

प्रश्न 28 जीरोबेस बजट (शून्य आधारित) बजट के बारे में बताइए।

उत्तर इस बजट के जनक पीटर एंम पायर एक अमेरिकी थे। इसे 1979 में राष्ट्रपति जिमी कार्टर द्वारा अपनाया गया। शून्य आधारित बजट प्रणाली व्यय पर अंकुश लगाने की एक तार्किक प्रणाली है। इस प्रणाली में विगत कार्यों को आधार नहीं बनाया जाता। इस प्रणाली में प्रत्येक क्रियाकलाप को शुन्य आधार से पुनह औचित्य निर्धारित करना पड़ता है एवं इसके लिए नए सिरे से व्यय का प्रावधान किया जाता है।

प्रश्न 29. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से

(1) राजस्व घाटा, (2) बजट घाटा,

(3) राजकोषीय घाटा (4) प्राथमिक घाटे की गणना कीजिए

1.	राजस्व प्राप्तियां	=	100
	A कर राजस्व	=	80
	B गैर कर राजस्व	=	20
2.	पूंजीगत प्राप्तियां	=	60
	A ऋणों की वसूली	=	10
	B अन्य प्राप्तियां	=	20
	C उधार व अन्य देनदारियां	=	30
3.	कुल प्राप्तियां।	=	160(राजस्व प्राप्तियां+पूंजीगत प्राप्तियां)
4.	कुल व्यय।	=	160
	A राजस्व व्यय	=	135
	1 ब्याज भुगतान	=	12
	2 अनुदान।	=	18
	B पूंजीगत व्यय।	=	25

उत्तर 1 राजस्व घाटा = राजस्व व्यय – राजस्व प्राप्तिया।

राजस्व घाटा = 135–100

राजस्व घाटा = 35

2 बजट घाटा = कुल व्यय – (कुल प्राप्तियां –उधार)

बजट घाटा = 160 – (160–30) = 160–130

बजट घाटा = 30

2 राजकोषीय घाटा = कुल व्यय–(राजस्व प्राप्तियां+अन्य प्राप्तियां+ऋण वसूली)

राजकोषीय घाटा = 160 – (100 + 20 + 10)

राजकोषीय घाटा = 160– 130

राजकोषीय घाटा = 30

4 प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा – ब्याज भुगतान

प्राथमिक घाटा = 30–12=18

प्रश्न 30 बजट के विभिन्न घटकों को चार्ट द्वारा बताइए।

उत्तर :–

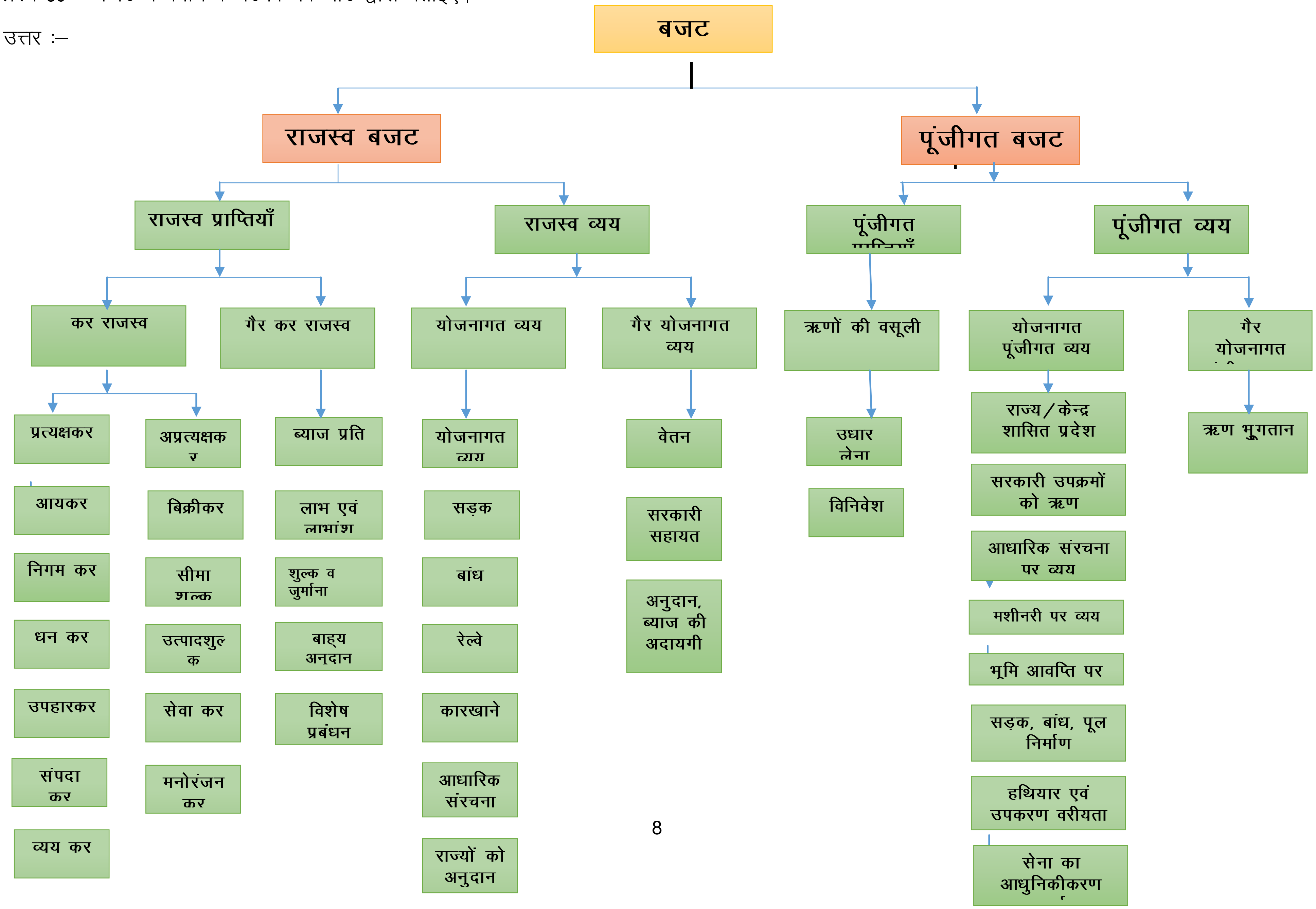

प्रश्न 1. मान लीजिए C = 40 + 0.8YD, T : 50, I = 60, G = 40, X = 90, M = 50 + 0.05Y. (a) सन्तुलन आय ज्ञात कीजिए (b) सन्तुलन आय पर निवल निर्यात सन्तुलन ज्ञात कीजिए (c) सन्तुलन आय और निवल निर्यात सन्तुलन क्या होता है, जब सरकार के क्रय में 40 से 50 की वृद्धि होती है।

उत्तर - (a) **सन्तुलन आय की गणना –**सन्तुलन आय की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाएगी-

$Y = \bar{C}+c(Y-T)+\bar{I}+\bar{G}+\bar{X} - M-mY$

Y = Y = 40+0.8 (Y-50)+60+40+90-50– 0.05Y

Y = 40+0.8Y– 40+60 + 40+ 90-50 – 0.05Y

Y = 0.8Y + 140

Y - 0.75Y = 140

Y - 0.75Y = 140

0.25Y = 140

Y = 140 / 0.25 560

Y = 560

प्रश्न2. जब दो देशों के मध्य वस्तुओं तथा सेवाओं व का क्रय-विक्रय किया जाता है तो उसे क्या कहा जाता है ?

उत्तर – विदेशी व्यापार।

प्रश्न 3. किसी देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं और परिसम्पत्तियों के लेन-देन के विवरण को किस में दर्ज किया जाता है ?

उत्तर – अदायगी सन्तुलन अथवा भुगतान सन्तुलन।

प्रश्न 4. सेवाओं का व्यापार किस प्रकार का व्यापार कहलाता है ?

उत्तर- अदृश्य व्यापार।

प्रश्न 5. वस्तुओं के निर्यात और आयात के सन्तुलन को क्या कहा जाता है ?

उत्तर – व्यापार सन्तुलन।

प्रश्न 6. उस विनिमय दर को क्या कहते हैं जो बाजार की माँग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है ?

उत्तर – नम्य अथवा तिरती विनिमय दर|

प्रश्न 7. विनिमय दर को प्रभावित करने वाले कोई दो तत्त्व बताइए।
उत्तर - (1) सट्टेबाजी (2) ब्याज की दरें।

प्रश्न 8. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन का आयोजन किस वर्ष किया गया ?

उत्तर - वर्ष 1994 में।

प्रश्न 9. इक्वेडोर ने डॉलरीकरण की नयी व्यवस्था किस वर्ष अपनायी ?

उत्तर- वर्ष 2000 में।

प्रश्न 10. विनिमय दर का क्या अभिप्राय है?

उत्तर – वह दर जिसके आधार पर एक देश की मुद्रा को दूसरे देश की मुद्रा में बदला जाता है।

प्रश्न 11. विदेशी विनिमय बाजार के तीव्र विकास के कोई दो कारण बताइए।

उत्तर - (1) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि (2) विदेशी पूँजी निवेश को बढ़ावा।

प्रश्न 12. नम्य अथवा तिरती विनिमय दर प्रणाली किसे कहते हैं ?

उत्तर – वह प्रणाली जिसमें विनिमय दर का निर्धारण माँग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है।

प्रश्न 13. अवमूल्यन किसे कहते हैं ?

उत्तर – अपनी के विनिमय मूल्य मुद्रा को जान-बूझकर कम देना अवमूल्यन कहलाता है।

प्रश्न 14. चालू और पूँजी खाते के अतिरिक्त भुगतान सन्तुलन का तीसरा घटक कौनसा है ?

उत्तर – चालू और पूँजी के अतिरिक्त भुगतान शेष – का तीसरा घटक भूल-चूक (अर्थात्त्रुटि और लोप) है।

प्रश्न 15. स्थिर विनिमय दर प्रणाली का कोई एक लाभ बताइए।

उत्तर – स्थिर विनिमय दर प्रणाली से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है|

प्रश्न 16. विदेशी विनिमय सन्तुलन दर किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिस दर पर विदेशी विनिमय की माँग और पूर्ति बराबर होती है।

प्रश्न 17. अदायगी सन्तुलन खाते के कोई दो प्रमुख घटकों के नाम बताइए।

उत्तर – (1) चालू खाता (2) पूँजी खाता।

प्रश्न 18. विदेशी व्यापार आधिक्य एवं व्यापार घाटे में अन्तर समझाइए।

- उत्तर – जब देश के निर्यात, आयातों से अधिक होते हैं तो व्यापार आधिक्य एवं निर्यात, आयातों से कम होते हैं तो व्यापार घाटे की स्थिति होगी।

प्रश्न 19. विनिमय दर की परिभाषा दें।

अथवा

विदेशी विनिमय दर से क्या अभिप्राय है ?

- उत्तर – विनिमय दर अथवा विदेशी विनिमय दर से हमारा अभिप्राय उस दर से है, जिसके आधार पर एक देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित की जाती है।

प्रश्न 20. लोचशील विनिमय दर किसे कहते हैं ?

- उत्तर – लोचशील विनिमय दर वह दर होती है जो विदेशी विनिमय बाजार में मुद्रा की माँग एवं पूर्ति के अनुसार स्वतंत्र रूप से निर्धारित होती है ।

प्रश्न 21. व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन में क्या अन्तर है ?

- उत्तर–व्यापार संतुलन में केवल आयातों एवं निर्यातों को शामिल किया जाता है, जबकि भुगतान संतुलन में सभी आर्थिक लेन-देनों को शामिल किया जाता है।

प्रश्न 22. बन्द अर्थव्यवस्था से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – एक अर्थव्यवस्था को तब बन्द अर्थव्यवस्था कहते हैं जब उसका अन्य किसी देश से कोई व्यापार अथवा परिसम्पत्तियों का लेन-देन नहीं होता है।

प्रश्न 23. एक देश का व्यापार शेष (+) 100 करोड़ रुपये तथा वस्तुओं का निर्यात मूल्य 175 करोड़ रुपये है।वस्तुओं का आयात मूल्य ज्ञात करें।

उत्तर- व्यापार शेष = निर्यातों का मूल्य – आयातों का मूल्य

100 = 175 – आयातों का मूल्य

आयातों का मूल्य= 175-100 = 75 करोड़ रुपये।

प्रश्न 24. खुली अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं ?

उत्तर – खुली अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है, जिसमें अन्य राष्ट्रों के साथ वस्तुओं, सेवाओं तथा वित्तीय – परिसम्पत्तियों का व्यापार किया जाता है।

प्रश्न 25. खुली अर्थव्यवस्था एवं बन्द अर्थव्यवस्था में एक अन्तर बताइए।

उत्तर – खुली अर्थव्यवस्था का शेष विश्व से आर्थिक संबंध होता है।

बन्द अर्थव्यवस्था का शेष विश्व से कोई आर्थिक संबंध नहीं होता।

प्रश्न 26. भुगतान सन्तुलन की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– (1) इसमें सभी दृश्य, अदृश्य एवं पूँजी अन्तरण की मदें शामिल की जाती हैं।

(2) इसमें दोहरी लेखा पद्धति के आधार पर भुगतान व प्राप्तियों को लेखाबद्ध किया जाता है।

प्रश्न 27. विदेशी मुद्रा का वायदा बाजार क्या है ? विदेशी मुद्रा के वायदा बाजार की कोई दो मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर – विदेशी मुद्रा का वायदा बाजार वह बाजार है जिसमें मुद्रा का लेन-देन भविष्य की किसी तिथि पर होता है।

विशेषताएँ-

(i) विदेशी मुद्रा के वायदा बाजार केवल भविष्य से सम्बन्धित होता है
(ii) यह भविष्य की विनिमय दर का निर्धारण होता है।

प्रश्न 28. सन्तुलन विनिमय दर का निर्धारण कैसे होता है ?

अथवा

स्वतंत्र बाजार में विदेशी विनिमय दर का निर्धारण कैसे किया जाता है ?

उत्तर – सन्तुलन विनिमय दर का निर्धारण वहाँ होता है जहाँ विदेशी विनिमय की माँग, विदेशी विनिमय की पूर्ति के बराब रहो।इसे सामने दिये गये रेखा चित्र से स्पष्ट किया जा सकताहै।

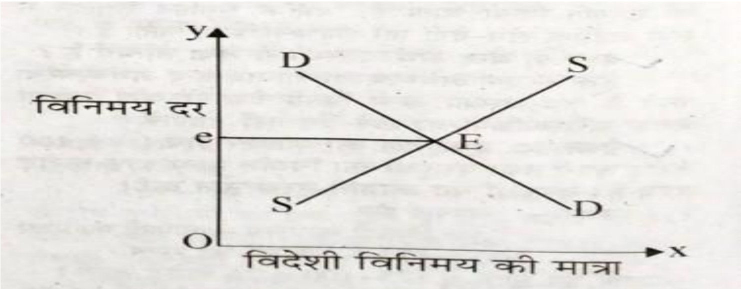

यहाँ संतुलन बिन्दु E के अनुसार Oe विनिमय दर का निर्धारण होता है।

प्रश्न 29. विदेशी मुद्रा दर का क्या अर्थ है ? तीन कारण दीजिये कि क्या लोग विदेशी मुद्रा प्राप्त करना चाहते हैं ?

- उत्तर – विदेशी मुद्रा दर वह दर है जिसके आधार पर एक देश की मुद्रा को अन्य देश की मुद्रा में परिवर्तित किया जाता है।विदेशी मुद्रा की माँग के कारण-

(1) शेष विश्व से किए गए आयातों के भुगतान हेतु।

(2) शेष विश्व को उपहार अनुदान एवं निवेश हेतु।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों के भुगतान हेतु।

प्रश्न 30. विदेशी मुद्रा की माँग और पूर्ति के चार-चार स्रोतों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर – **विदेशी मुद्रा की माँग के स्रोत-**

(1) वस्तुओं एवं सेवाओं के आयात हेतु

(2) विदेशों में विनियोग हेतु

(3) विदेशों को अनुदान देने हेतु

(4) विदेशी ऋणों के भुगतान हेतु।

विदेशी मुद्रा की पूर्ति के स्रोत-

(1) विदेशी विनियोगों से प्राप्त राशि

(2) निर्यातों से प्राप्त राशि

(3) विदेशों द्वारा ऋण भुगतान से प्राप्त राशि

(4) विदेशों से प्राप्त साधन आय।

प्रश्न 31. भुगतान संतुलन खाते के चालू खाते और पूँजी खाते की चार-चार मदें बताइये।

उत्तर- **चालू खाते की मदें–**

(1) वस्तुओं का आयात-निर्यात

(2) सेवाओं का आयात-निर्यात

(3) गैरकारक आय

(4) निजी अन्तरण।

पूँजी खाते की मदें-

(1) विदेशी सहायता

(2) विदेशी निवेश

(3) विदेशी ऋण

(4) पूँजीगत लेन-देन।

प्रश्न 32. लचीली विनिमय दर के मुख्य गुण समझाइये।

अथवा

नम्य विनिमय दर के कोई चार गुण बताइए।

उत्तर – नम्य अथवा लचीली विनिमय दर के गुण-

प्रश्न 33. यदि c = 50. यदि c = 0.8 तथा m = 0.4 हो तो खुली अर्थव्यवस्था में गुणक का मूल्य ज्ञात कीजिए।

उत्तर- गुणक = 1 / 1-c+m

= 1 /1-0.8 +0.4

= 1 / 0.2+0.4

= 1 / 0.6

= 1.67

प्रश्न 34. यदि किसी अर्थव्यवस्था में सन्तुलित आय 1000 करोड़ रुपये, निर्यात = 180 करोड़ रुपये, आयात (M) = 80 + 0.2Y है तो निवल निर्यात सन्तुलन ज्ञात कीजिए।

उत्तर- निवल निर्यात सन्तुलन = X - M

X = 180 करोड़ रुपये

M = 80 + 0.2 x 1000

= 80 + 200

= 280 करोड़ रुपये

अतः निवल निर्यात सन्तुलन = 180-280

= - 100 करोड़ रुपये

प्रश्न 35. अवमूल्यन की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

उत्तर – केन्द्रीय बैंक देश की मुद्रा का अवमूल्यन देश के निर्यातों को बढ़ाने तथा आयातों को कम करने के लिए करता है।ऐसा करने से विदेशी विनिमय का अन्तर्वाह बढ़ सकता है तथा बहिर्वाह कम हो सकता है, इससे भुगतान सन्तुलन में मदद मिलती है।

प्रश्न 36. खुली अर्थव्यवस्था एवं बन्द अर्थव्यवस्था में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -

खुली अर्थव्यवस्था	**बन्द अर्थव्यवस्था**
1. खुली अर्थव्यवस्था का शेष विश्व से आर्थिक संबंध होता है।	1. बन्द अर्थव्यवस्था का शेष विश्व से कोई आर्थिक संबंध नहीं होता।
2. खुली अर्थव्यवस्था में विकास की संभावनाएँ अधिक होती हैं।	2. बन्द अर्थव्यवस्था में विकास की संभावनाएँ कम होती हैं।
3. इसमें घरेलू आय तथा राष्ट्रीय आय में अंतर हो सकता है।	3. इसमें घरेलू आय तथा राष्ट्रीय आय समान होती है।
4. आजकल अधिकांश अर्थव्यवस्था खुली अर्थव्यवस्था है।	4. आधुनिक युग में बन्द अर्थव्यवस्था देखने में नहीं आती।

प्रश्न 37. अदायगी सन्तुलन की पूँजी खाते की मदों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - **(अ) पूँजीगत प्राप्तियाँ-**

(1) विदेशी ऋणों की प्राप्ति

(2) बैंकिंग पूँजी का आन्तरिक प्रवाह

(3) सरकारी क्षेत्र द्वारा प्राप्त ऋण

(4) रिजर्व बैंक एवं मौद्रिक स्वर्ण प्राप्तियाँ

(5) स्वर्ण का विक्रय।

(ब) पूँजीगत भुगतान-

(1) विदेशी ऋणों का भुगतान

(2) बैंकिंग पूँजी का बाह्य प्रवाह

(3) सरकार द्वारा ऋणों का भुगतान

(4) रिजर्व बैंक द्वारा एवं मौद्रिक स्वर्ण भुगतान

(5) स्वर्ण का क्रय।

प्रश्न 38. व्यापार शेष और भुगतान शेष की परिभाषा करें।

उत्तर- **व्यापार शेष –**एक लेखा वर्ष की अवधि में किसी देश के विश्व के अन्य देशों के साथ वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात तथा आयात के अन्तर को व्यापार शेष कहते हैं।

भुगतान शेष –एक वर्ष की अवधि में किसी देश के शेष विश्व के साथ सभी प्रकार के लेन-देनों के अंतर को भुगतान शेष कहते हैं |

प्रश्न 38. विदेशी विनिमय बाजार के किन्हीं दो प्रमुख व्यवसायियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर – **(1) बैंक –**बैंक विदेशी विनिमय बाजार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यवसायी होते हैं।ये बैंक अपने ग्राहकों के आदेश पर विदेशी विनिमय बिलों की कटौती, भुगतान और क्रय- विक्रय करते हैं।

(2) स्वीकृतिगृह –स्वीकृति गृह अपने ग्राहकों की ओर से विदेशी विनिमय बिलों पर स्वीकृति देकर अन्तर्राष्ट्रीय भुगतानों में मदद करते हैं।